Fortnightly per copy Rs. 5/- only　　ओ३म्　　3rd March 2016

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

ऋषि बोधात्सव पर्व 7 मार्च पर

महर्षि दयानन्द की प्रमुख देन

महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार का मार्ग क्यों चुना? इसका उत्तर है कि उनके समय में देश व संसार के लोग असत्य व अज्ञान के मार्ग पर चल रहे थे। उन्हें यथार्थ सत्य का ज्ञान नहीं था जिससे वह जीवन के सुखों से रहित मोक्ष के सुख से भी सर्वथा अपरिचित थे। महर्षि दयानन्द शारीकि बल और पूर्ण विद्या से सम्पन्न पुरुष थे। उन्होंने देखा कि सभी मनुष्य अज्ञान के महारोग से ग्रस्त है। उनमें सत्य व असत्य जानने व समझने का योग्यता नहीं है। अतः अविद्या व अज्ञान का नाश करने के लिए उन्होंने असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों के खण्डन और सत्य, ज्ञान व सामाजिक उत्थान के कार्यों का मण्डन किया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ उनकी इस प्रवृत्ति व स्वभाव की पुष्टि करता है। सत्यार्थप्रकाश के पहले 10 समुल्लास सत्य व ज्ञान के मण्डन करते हैं तथा शेष चार समुल्लास असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों का खण्डन करते हैं। महर्षि दयानन्द धर्मात्मा थे, दयालु थे, ईश्वर का यथार्थ ज्ञान रखने वाले ईश्वर भक्त थे तथा वह जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान भी रखते थे। **योग व ध्यान के द्वारा उन्होंने ईश्वर व जीवात्मा आदि का प्रत्यक्ष किया था।** ऐसा विवकेशील धर्मात्मा सत्पुरुष किसी भी मनुष्य को दुःखी नहीं देख सकता। दुखियों को देख कर वह स्वयं दुखी होते थे। वह सबको अपने समान ईश्वर व आत्मा आदि का ज्ञान प्रदान कर सुखी व आनन्दित करना चाहते थे। **इसी कारण उन्होंने सत्य व यथार्थ ज्ञान का प्रचार करने के लिए ईश्वर से प्राप्त ज्ञान चार वेदों के प्रचार करने का निर्णय किया।** यदि वह ऐसा न करते तो उनको चैन वा सुख–शान्ति न मिलती। यदि एक सच्चे डाक्टर के पास किसी रोगी को ले जाया जाये तो वह डाक्टर क्या करेगा। क्या उस रोगी को मरने के लिए छोड़ देगा व उसकी चिकित्सा कर उसे स्वस्थ करेगा। सभी जानते हैं कि सच्चा डाक्टर रोगी को स्वस्थ करने के उपाय करेगा। इसी प्रकार से एक अध्यापक जो ज्ञानी है, वह अपने व अपने लोगों का ज्ञान दूर करेगा। ज्ञानी होने का यही अर्थ होता है कि वह ज्ञान का प्रसार करे और अज्ञान को नष्ट करे। हम यह भी देखते हैं कि जब कोई अन्याय से पीड़ित होता है तो वह किसी शक्तिशाली मनुष्य की शरण में जाता है और उससे अपनी रक्षा की विनती करता है। धर्मात्मा व ज्ञानी शक्तिशाली मनुष्य अन्याय से पीड़ित व्यक्ति की रक्षा करना अपना धर्म वा कर्तव्य समझता है। यह सब गुण महर्षि दयानन्द जी में थे अतः उन्होंने सभी असहाय व अज्ञान के रोग से पीड़ित लोगों को वेदों का ज्ञान देकर उन्हें ज्ञानी व शक्ति से सम्पन्न बनाया। हम व अन्य सहस्रों मनुष्य भी उनके ज्ञान से उनकी मृत्यु के सौ से अधिक वर्षों बाद भी लाभान्वित हुए हैं। उनका यह कार्य ही उनको विश्व में आज भी जीवित व अमर रखे हुए है। यदि वह ऐसा न करते तो आज हम अन्य करोड़ों लोग उनका नाम भी न जानते, उनके प्रति श्रद्धा व आदर रखने का तो तब प्रश्न ही नहीं था। अतः महर्षि दयानन्द ने अज्ञान के रोग से पीड़ित अपने देशवासी बन्धुओं किंवा मनुष्यमात्र के अज्ञान व अन्धविश्वास के रोग को दूर करने के लिए वेद प्रचार का मार्ग चुना और उसे अपूर्व रीति से सम्पन्न किया।

पद्मश्री डॉ. टी.वी. नारायणजी का सम्मान समारोह वैभव पूर्वक सम्पन्न

गृह राज्य मंत्री नायनी नरसिंहा रेड्डी जी तथा केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री बण्डारु दत्तात्रेयजी उपस्थित होकर डॉ. टी.वी. नारायणजी को सम्मानित किया

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विद्वत समागम का आयोजन किया गया । समागम का उद्घाटन करते हुए गुरुकुलीय वैदिक विद्वान एवं स्वामी ब्रह्मानंदजी सरस्वती कामारेड्डी ने समागम की अध्यक्षता की । मंत्री सभा हरिकिशनजी व प्रधान सभा श्री विट्ठल रावजी भी चित्र में देखे जा सकते है । विद्वानों में पं. दीनदयालजी वेदालंकार, पं. यशस्वीजी, पं. गणेशदेवजी, आचार्य विद्यानंदजी, आचार्या सुमेधाजी एवं पं. सुशील कुमार शास्त्री आदि ।

पद्मश्री डॉ. टी.वी. नारायणजी का सम्मान समारोह का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए गृह राज्य मंत्री श्री नायनी नरसिंहा रेड्डीजी तथा केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री बण्डारु दत्तात्रेयजी सम्बोधन करते हुए ।

महर्षि दयानन्द की प्रमुख देन

यदि हम सूर्य पर दर्षिट डाले तो हम पाते हैं कि सूर्य में प्रकाश व दाहक शक्ति अर्थात् गर्मी व ऊर्जा है। सूर्य में आकर्षण शक्ति भी है। अपने इन गुणों का सूर्य अपने लिए प्रयोग नहीं करता अपितु वह इससे संसार व प्राणी मात्र को लाभान्वित करता है। यदि सूर्य न होता तो मनुष्य का अस्तित्व भी न होता। इसी प्रकार से वायु पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वायु पदार्थों को जलाने में सहायक व समर्थ होने सहित वह मनुष्यों को प्राणों के द्वारा जीवित रखने में भी सहायक है। वायु का प्रयोजन अपने लिए कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार से जल, पर्षथिवी व समस्त प्राणीजगत है जो स्वयं के लिए कुछ नहीं अपितु मनुष्यों व अन्यों के लिए ही अपने जीवन को समर्पित करते हैं। यदि सारा संसार व इसके सभी पदार्थ परोपकार कर रहे हैं तो क्या मनुष्य का यह कर्तव्य नहीं है कि उसमें ईश्वर ने जिन गुणों को दिया है, उससे वह भी अन्य सभी मनुष्यों व प्राणियों का उपकार करे। यह अवश्य करणीय है और परोपकार करना ही मनुष्य का धर्म सिद्ध होता है। मत व धर्म परस्पर सर्वथा भिन्न हैं। मत का कुछ भाग ध र्म को एक अंग के रूप में अपने भीतर लिए हुए होता है लेकिन वेदमत जो कि ईश्वर प्रदत्त मत है, उसे छोड़ कर कोई भी मत सर्वांश में पूर्णतः धर्म नही होता। यदि मतों में से अविद्या व उनके सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को हटा दिया जाये और उन्हें वेदानुकूल बनाया जाये, तब ही उन्हें धर्म के निकट लाया जा सकता है। महर्षि दयानन्द पौराणिक मत में जन्मे थे। शिवरात्रि की घटना से उन्हें लगा कि ईश्वर की पूजा की यह रीति उपासना की सही रीति नहीं है। अतः उन्होंने उसका त्याग कर दिया और सत्य की खोज की। सत्य की खोज करते हुए उन्हें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का सर्वोत्तम साधन योग प्राप्त हुआ। इसका अभ्यास कर उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार व उसका प्रत्यक्ष भी किया जिसे उनके जीवन के लक्षणों से जाना जा सकता है। अपनी विद्या प्राप्ति की तीव्र इच्छा को पूरी करने के लिए वह योग्य गुरुओं की तलाश करते रहे जो उन्हें 35 वर्ष की अवस्था में मथुरा के गुरु विरजानन्द जी के रुप में प्राप्त हुई और उनके सान्निध्य में तीन वर्ष रहकर उन्होंने प्राचीन वैदिक संस्कष्त भाषा के व्याकरण अष्टाध्यायी–महाभाष्य पद्धति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त किया। वैदिक साहित्य का कुछ अध्ययन वह पहले कर चुके थे और इस ज्ञानवर्षद्धि के प्रकाश में उन सभी ग्रन्थों के सत्यार्थ को जानकर वेदों के ज्ञान को भी उन्होंने प्राप्त किया। हमारे अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि दयानन्द ने अध्यात्म के क्षेत्र में विद्या व योगाभ्यास से ईश्वरोपासना की शीर्ष स्थिति असम्प्रज्ञान समाधि को प्राप्त किया था। यह सब प्राप्त कर उनके जीवन का उद्देश्य व प्रयोजन पूरा हो गया था। अब अपने ज्ञान रूपी अक्षय धन को दान करने का अवसर था जिसे गुरु वा ईश्वर की प्रेरणा से प्राप्त कर उन्होंने देश–देशान्तर में पूरी उदारता व निष्पक्ष भाव से वितरित किया।

महर्षि दयानन्द ने जो ज्ञान प्राप्त किया था उसे हम ज्ञान की पराकाष्ठा की स्थिति समझते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि **'ज्ञान से बढ़कर पवित्र व मूल्यवान संसार में कुछ भी नहीं है।'** ज्ञान का दान सब दानों में प्रमुख व महत्वपूर्ण है। जो कार्य ज्ञान से हो सकता है वह धन से कदापि नहीं हो सकता। ध ान से किसी को बुद्धिमान, बलवान, निरोग, वेदज्ञ, सत्पुरुष, धर्मात्मा नहीं बनाया जा सकता। इन व ऐसे सभी कार्यो के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान से ही अपनी आत्मा को जानने के साथ ईश्वर व संसार को भी जाना जा सकता है। ज्ञान से ही मनुष्य अभ्युदय व मोक्ष को प्राप्त होता है। ज्ञान मनुष्य की मृत्यु के बाद भी आत्मा के साथ जाता है जबकि सारे जीवन में अनेक कष्ट उठाकर कमाया गया धन यही छूट जाता है। धन मनुष्य में अहंकार व अनेक दोषों को उत्पन्न करता है। धन की तीन गति हैं। दान, भोग व नाश। धन को यदि सदाचार पूर्वक न कमाया जाये और दान न किया जाये तो वह इस जन्म व परजम्न में अवनति व दुःखों का कारण बनता है इस पर हमारे सभी ऋषि–मुनि व शास्त्र एक मत हैं। अतः जीवन की उन्नति के लिए परा व अपरा वा आध यात्मिक और सांसारिक दोनों प्रकार का ज्ञान मनुष्य को होना चाहिये। यही सन्देश वेद प्रचार के द्वारा महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में दिया था जो आज भी पूर्व की तरह सर्वाधिक महत्वपवूर्ण एवं उपयोगी है। हम देश की वर्तमान में जो उन्नति देखते हैं उसमें महर्षि दयानन्द का पुरुषार्थ सर्वाधिक महत्वूपर्ण दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने संसार के लोगों को विस्मृत सत्य वेद ज्ञान से परिचित कराने के अतिरिक्त सभी अन्धविश्वासों, कुरीतियों जिनमें मूर्तिपूजा, फलितज्योतिष, मृतक श्राद्ध, मन्दिरों व नदियों रूपी तीर्थ स्थान, सामाजिक असमानता, अशिक्षा आदि का खण्डन किया और निराकार ईश्वर की योग व ध्यान विधि से उपासना, अन्धविश्वासों से सर्वथा दूर रहने, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करने, नारी सम्मान, समानता, देशप्रेम, न्याय सहित सुपात्रों को ज्ञान व धन आदि के दान की प्रेरणा दी। **उनका सन्देश है कि वेद ही सब सत्य विद्याओं, परा व अपरा विद्याओं के ग्रन्थ हैं। इनका पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना व सर्वत्र प्रचार करना ही मनुष्य का परम धर्म है।** जिन बातों से असमानता उत्पन्न हो, पक्षपात व अन्याय हो वह कभी भी धर्म नहीं हो सकती। ईश्वर की उपासना के लिए पवित्र जीवन व शुद्ध स्थान चाहिये। उपासना व ईश्वर के ध्यान के लिए बड़े–बड़े भवनों व मन्दिरों की आवश्यकता नहीं है। यदि महर्षि दयनन्द की इन शिक्षाओं को जीवन में स्थान दिया जाये तो इससे विश्व का कल्याण हो सकता है। उनकी बातों को न मानने के कारण ही आज विश्व में सर्वत्र अशान्ति व स्वार्थ से प्रेरित कार्य ही सर्वत्र होते दृष्टिगोचर हो रहे हैं जो वर्तमान व भविष्य में अनिष्ट का सूचक है।

फाल्गुन कष्ष्ण दशमी (4 मार्च, 2016) को महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस और फाल्भ्गुन कष्ष्णा चतुर्दशी (7 मार्च, 2016) को ऋषि बोधोत्सव पर्व हैं। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर वेदों के स्वाध्याय व प्रचार का व्रत लेना सभी मनुष्यों को लेना चाहिये जिससे देश व संसार की उन्नति सहित मनुष्य का यह जन्म व परजन्म उन्नत होगा। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक संज्ञा-विज्ञान

शब्द की उत्पत्ति, स्वरूप और नित्यता का प्रश्न संस्कृत साहित्य में बड़े महत्त्व का प्रश्न रहा है। इस प्रश्न के उस दार्शनिक स्वरूप में संदेह नहीं हो सकता, परन्तु वह असाधारण विशेषता, जो प्रत्येक संस्कृतज्ञ के ध्यान को आकर्षित करती है, इसके उस प्रभाव की सर्व व्यापकता है जो कि यह मानव ज्ञान के अन्य विभोगों पर डालता है। प्राचीन संस्कृत समयों के निरुक्तकार, वैयाकरण और भाषा तत्त्ववेत्ता ही केवल इस प्रश्न को नहीं उठाते, अपितु मर्मज्ञ और सूक्ष्म दार्शनिक, अन्तिम और सर्वोत्तम संस्कृत मीमांसक, महामुनि व्यास के शिष्य, षड्दर्शनों में एक के प्रवर्त्तक, धर्मसूत्रकार जैमिनि भी इस प्रश्न के प्रभाव से अपने विषय को पृथक नहीं रख सके। अपनी मीमांसा के आरम्भ में ही वह इस विचार को उठाते हैं और अपने ग्रन्थ के एक बड़े भाग को (यथा प्रमाण) इस प्रश्न के स्पष्टीकरण में लगाते हैं। मानव-वाणी के सम्बन्ध में अनुकरणवाद और अन्य कृत्रिम वादों पर विवाद करने में निपुण, आधुनिक भाषातत्त्वविज्ञान और अन्य कृत्रिम वादों पर विवाद करने में निपुण, आधुनिक भाषात्त्वविज्ञान के पाठक के लिये ऐसे प्रश्नों से उत्पन्न होनेवाले झगड़े की विशालता का अनुभव करना कठिन नहीं। संस्कृत साहित्य में जो स्थान इस विचार को दिया गया है, उसका उल्लेख हमने कुछ इस दृष्टि से नहीं किया कि इस सारे वितण्डा का अन्त कर दें, जो कदाचित् अनिवार्य है, प्रत्युत प्रश्न के उठाने में हमारा प्रयोजन यह है कि संक्षेपतः इसी विचारान्तर्गत एक अन्य और अधिक उपयोगी प्रश्न अर्थात् वैदिक संज्ञाविज्ञान की व्याख्या के प्रश्न को उठावें।

आज पर्यन्त वैदिक संज्ञाविज्ञान की व्याख्या के लिये सारे स्वीकृत उपायों का आधार किन्हीं पूर्व कल्पित भावों पर रखा गया है। विषय की गम्भीरता चाहती है कि इस पूर्व-कल्पित भावों का सावधानता के साथ परीक्षण और अध्ययन हो, और इन में से इस बाह्य सामग्री को काट छाँट करके निकाल दिया जाय जिससे कि भ्रमोत्पत्ति की सम्भावना है, और साथ ही ऐसी नवीन और अधिक युक्तिसंगत रीतियों का अन्वेषण और व्यवधान करना चाहिये जिससे इस विषय पर अधिक प्रकाश पड़ सके।

अस्तु, अब उन रीतियों की परीक्षा होनी चाहिये, जिनका आज तक अनुसरण होता रहा है। संक्षेप से, संख्या में वे तीन हैं, और कोई उत्तम नाम न मिलने के कारण वे पौराणिक, प्राक्कालीन और समकालीन शैली कहला सकती हैं।

पहले पौराणिक शैली को लीजिये। यह शैली वेदों को मिथ्याकथा, धार्मिक परिकथा की कल्पनात्मक भाषा में साधारण नैसर्गिक तथ्यों का, चित्र, यथार्थ का रेचक में सांकेतिक प्रदर्शन, प्राथमिक सत्य का अनावश्यक आडम्बर और दिखलावे के उपरी स्तर में पड़ा होना प्रकट करती है। अब, जहाँ तक पौराणिक खैली के जाल-कर्म में विचार को इस प्रकार भूर्तिमान करने का सम्बन्ध है, यह मानव-जीवन और अनुभव की अपेक्षाकृत असभ्य और सरलावस्था को ग्रहण करती है। प्राथमिक जांगलिक दशा के इस आधार से शनैः शनैः ईश्वर और धर्म के भावों को विकसित करती है और ऐसा होते ही मिथ्या-कथाओं का काल समाप्त हो जाता है। आगे यह इस प्रकार युक्ति देती है-सभ्यता की प्राथमिक अवस्थाओं में, जब कि प्राकृतिक नियमों का ज्ञान कम होता है और उनकी समझ बहुत ही कम होती है, मनुष्य के मानसिक व्यापारों के संपादन में उपमा बड़े महत्व का काम करती है। थोड़ा सा भी सादृश्य अथवा सादृश्य का आभास ही उपमा के प्रयोग के प्रतिपादनार्थ पर्याप्त होता है। मानवीय अनुभव के असभ्य प्रारम्भों के ऐसे काल में स्थूलतम प्राकृतिक शक्तियाँ मानव मन को, प्रधानतः गतियों द्वारा प्रभावित करती हैं। वायु चलती हुई, अग्नि जलती हुई, पत्थर या फल गिरता हुआ, इन्द्रियों को सारतः जंगमवत् प्रभावित करता है। अब, शारीरिक बल के चेतन व्यवसाय के सारे क्षेत्र में, इच्छा क्रिया से पूर्व होती है और क्योंकि जगत् में एक असभ्य का अतिविषयानुभव भी इस ज्ञान को ग्रहण करता है, अतः ऐसा तर्क करना बद्धि से अत्युक्ति क्रियाएँ होती है, इच्छा शक्ति सम्पन्न हैं। प्राकृतिक शक्तियों में जब इस प्रकार चेतनत्वारोप हो जाता है तो फिर उनको देवता बनते कुछ देर नहीं लगती। वह प्रबल प्रताप, अप्रतिहत सामर्थ्य और प्रायः महावेग, जिससे कि एक असम्भव को ये शक्तियाँ काम करती दिखाई देती हैं उसके अन्दर भय, त्रास और पूजा का भाव उत्पन्न कर देती हैं। अपनी निर्बलता, दीनता और हीनता का भाव उस असम्भव मन को शनैः शनैः आ घेरता है, और बुद्धि द्वारा आरोपित चेतनत्व अब चित वेग से देवत्व को प्राप्त हो जाता है। इस मतानुसार, वेद, जो निस्संदेह आदिम काल की पुस्तके हैं, ऐसे ही भाव-विशिष्ट पुरुषों की प्रार्थनाएँ हैं। यह प्रार्थनाएँ प्राकृत शक्तियों की हैं जिनमें कि आँधी और वर्षा भी सम्मिलित है। इन प्रार्थनाओं से असभ्य लोगों के बदला लेने तथा पूजा के मनोभावों का परिचय मिलता है।

जब आनुमानिक मनोविज्ञान इन स्वीकृत तत्वों को, चाहे वे शुद्ध हो वा अशुद्ध, दे देता है तो फिर सापेक्ष भाषा-त्तवज्ञान और सापेक्ष मिथ्याकथाविज्ञान उनको अतीव करते हैं। विविध देशी की मिथ्या-कथाओं की तुलना दिखाती है कि मानव बुद्धि का व्यापार समान है, तथा मिथ्याकथाओं के घड़ने का यह क्रम न केवल सब कहीं सार्वत्रिक ही है, प्रत्युत एक सा भी है। स्कन्डीनेविया, यूनान और भारत की देवमालाओं के जलवायु के प्रभावों से उत्पन्न होने वाले आकस्मिक भेदों की देवमालाओं के जलवायु के प्रभावों से उत्पन्न होने वाले आकस्मिक भेदों के अतिरिक्त और कोई स्पष्ट भेद नहीं। सापेक्ष भाषातन्त्वज्ञान इन दृश्यचमत्कारों की सर्वव्यापकता और समानता को ही नहीं मानता, प्रत्युत भाषा तथा वेश में, जिससे कि वह चमत्कार आवृत्त होते हैं, उनकी स्वरसंवादी एकता को भी निर्देशित करता है।

इन तीन स्त्रोतो अर्थात् सापेक्ष भाषातत्त्वज्ञान, आनुमानिक मनोविज्ञान और सापेक्ष कथा विज्ञान से प्राप्त साक्षी वस्तुतः बहुत बड़ी है, और हमने इस शैली के स्वरूप का तथा उस साक्षी का वर्णन जिस पर कि इन की सिद्धि निर्भर है, अपेक्षाकृत अधिक इसलिये किया है कि कम से कम न्यायता के विचार से ही इस शैली का मूल्य और विशिष्टताएँ कम न समझी जाएँ।

सापेक्ष भाषात्त्वज्ञान और सापेक्ष मिथ्याकथाज्ञान के परिणाम अस्वीकृत न होने चाहिये। वे हमारे विवाद में प्रारम्भिक स्थान या उपस्थित विषय में स्वीकृत सिद्धान्त हैं। इसलिये विवाद में प्रारम्भिक स्थान या उपस्थित विषय में स्वीकृत सिद्धान्त हैं। इसलिये विवादाई स्थल इन से परे, वस्तुतः इनके नीचे हैं। वे ही तथ्य अर्थात् सत्य के निर्णीत विषय है। उनका समाधान कैसे होना चाहिये ? और अन्य सब वस्तुओं के समाधान के समान यहाँ

भी विकल्प समाधान, प्रतिपक्षी, प्रतिज्ञाएँ, सदृश कल्पनाएँ उन्हीं तथ्यों और दृश्यचमत्कारों का सामना करने के लिये हो सकती हैं । विविधि देशों की मिथ्या कथाएँ एक सी हैं, इसका समाधान दो प्रकार की प्रतिज्ञाओं से हो सकता है, एक यह कि मनोविज्ञान सम्बन्धी विकास के नियम सर्वत्र एक जैसे हैं अथवा यह सारी बाते मिथ्या कथा विज्ञान या धर्म के किसी सामान्य पैतृक क्रम से आविर्भूत हुई हैं । स्वरसंवादी समानताएँ, उनके संशायात्मक और प्रायः अनवस्थित स्वभाव को छोड़कर समान इन्द्रियों और स्वसंवादी नियमों के व्यापार तक अथवा किसी ऐसी सामान्य पैतृक भाषा तक जिससे कि अन्य सभी भाषाएँ निकली हैं, समानतया ढूँढी जा सकती हैं । न ही यह शैलियाँ प्रतिपक्षी कल्पनाओं के झगड़े को मिटाने का अधिकार रख सकती हैं । शैलियों के तौर पर केवल पुराण कथा या स्वरविज्ञान सम्बन्धी सादृश्य वा सम्बन्ध ढूँढ सकती हैं, पर उनका समाधान नहीं कर सकतीं । यदि हम प्राप्त परिणामों के विकल्पमय स्वभाव का विचार तक नहीं करें तो भी आनुमानिक सिद्धि की दृष्टि से, ये समाधान वहुत कम सापेक्षिक मूल्य रखते हैं । हम ऐसे तथ्य से समाधान नहीं ढूँढते, जिसकी स्थिति पूर्वज्ञात है, परन्तु जिस समय हम अपने अनुमान की सिद्धि मान रहे होते हैं उसी समय हम अनुमान मात्र से किसी तथ्य का अस्तित्व मान लेते हैं । माने हुए अर्थात् कल्पित तथ्य का जिससे इष्ट समाधान ढूँढा जाता है, किसी स्वतन्त्र साक्षी से अनुमान नहीं किया जाता, परन्तु वह स्वयं संश्लिष्ट तथ्यों की स्वयं प्रत्यागमनीय परम्परा में एक शृङ्खला है । आगे देवमाला की वृद्धि किन्हीं मनोविज्ञान सम्बन्धी स्वीकृत तत्त्वों से अनुमान की जाती है । बड़ी ही आसानी से अनुमान हो सकता था कि यह एक पवित्रतर और सत्यतर धर्म का एक गिरा हुआ और टूटा हुआ पर बाद में मरम्मत करके लिपा पुता खण्डहर है । एक ग्रन्थकार ने वस्तुओं के (मतों को प्रधानतः सम्मिलित करते हुए) पतन का यदि वह अकेली छोड़ी जाय, अच्छा कथन किया है । न ही साम्प्रदायिक सिद्धान्ती और सम्मतियों के इतिहास के विद्यार्थी से यह तथ्य किसी प्रकार छिपा है । कौन ऐसी धार्मिक रीतियों को नहीं जानता, जो पहले तो विशेष वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये घड़ी गई थीं, पर जो कलान्तर में इन आवश्यकताओं के न रहने पर केवल अनुष्ठानों और व्यवहारों में, जो आकस्मिक नहीं प्रत्युत आवश्यक माने जाते हैं, परिणत हो गई । इस लिए मिथ्या कथाएँ तथा मिथ्या रीतियाँ या तो निगृहीत बुद्धि और जड़ीभूत तर्क के प्रभाव के नीचे काम करने वाली मानव कल्पना के फलों के रूप में उत्पन्न हो सकती हैं, या एक पवित्रतर और सत्यतर कर्म के अवशेष के परिणाम के तौर पर ।

इस विषय के सम्बन्ध में एक भी ऐसी प्रतिज्ञा नहीं, जिसके प्रतिकूल कोई प्रतिज्ञा न हो, एक भी ऐसी कल्पना नहीं जिसके स्वत्व किसी प्रतिपक्षी कल्पना से न टकराते हों, भाषा तत्त्वज्ञान और मिथ्याकथाज्ञान की प्रतिज्ञाओं के संदिग्ध स्वरूप को परे रखते हुए भी, उनसे निकाले गए परिणामों की अनिश्चिता दृष्टि से परे नहीं की जा सकती । अपनी ''ग्रीस इन इण्डिया'' नामक पुस्तक में पोकोक महाशय ने कुछ परिणाम निकाले हैं । उन्होने सकल यूनानी भौगोलिक नामों का मूल संस्कृत भारतीय नामों से ढूँढा है और इससे वे यूनान का भारतीयों से उपनिवेशित होना निकालते हैं । इन परिणामों के समान उपरोक्त प्रतिज्ञानुसार प्राप्त किये गये परिणाम, वर्तुलाकर तर्क की, निरन्तर अपने में लौटने वाली एक पूर्ण माला बनाते हैं । सजीत सम्बन्ध को मान कर, जो कि यवन और संस्कृत भाषाओं के बीच पाया जाता है, यह अवश्य सिद्ध हो जायगा कि स्थानों के यवन नाम स्थानों के भारतीय नामों से दूरवर्ती और खेंचतान युक्त (सीधी और स्पष्ट के विरुद्ध) सरूपता को अवश्य रखेंगे । यूनान में आर्यों का बस्ती बसाना कोई ऐसा परिणाम नहीं जो विशिष्ट स्थल विवरण विषयक सम्बन्धों से यथार्थतया निकाला जाय, जैसी महाशय पोकोक ने यवन और संस्कृत भाषाओं की सामान्य उत्पत्ति से स्वतन्त्र निकाला है ।

यूनानी और संस्कृ की उत्पत्ति की एकता एक ऐसा सामान्य सूत्र है जो ऐसे विशिष्ट सम्बन्धों से अधिक आगे सिद्ध नहीं हो सकता । मिथ्याकथाओं के अनेक प्रकारों और भाषाओं की सरूपता का तत्त्व एक स्पष्ट साधारण सिद्धान्त पर, अर्थात् मानव प्रकृति की एकरूपता पर भी पहुँचाता है । इस व्यापक सिद्धान्त के मूल्य से परे विशिष्ट मिथ्याकथा तथा भाषा विज्ञान सम्बन्धी तत्त्व कोई स्वतन्त्र मूल्य नहीं रखते । उनका मूल्य व्यापक सिद्धान्त में सम्मिलित हो जाता है । यह विशेष प्रतिज्ञाएँ, जब ठीक हो तो इनसे उस सामान्य प्रतिज्ञा का मूल्य बिल्कुल नहीं बढ़ता जिसको कि ये घड़ती हैं, परन्तु इसके गलत होने से उस प्रतिज्ञा की सच्चाई बहुत कुछ कम हो जाती है । प्रकृति के एक साधारण क्रम, अथवा एक सार्वलौकिक नियम के सुजातत्व पर आश्रित एक परिणाम, ऐसे क्रम, अथवा एक सार्वलौकिक नियम के सुजातत्व पर आश्रित एक परिणाम, ऐसे क्रम या नियम के विशेष दृष्टान्तों की गणना से जो जाति में समान हों, कोई वास्तविक स्वतन्त्र और न्याय सम्मत बल प्राप्त नहीं कर सकता । सारी उपर्युक्त बातें एक दृष्टि से तुलनाजन्य देवमाला के प्रश्न पर प्रभाव डालनेवाली समझी जाएँ । इनका वैदिक संविज्ञान पर कोई स्पष्ट व्यक्तिगत प्रभाव नहीं । किन्तु एक और बात है जिसका वैदिक संज्ञाविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले देवमाला वाद से सीधा संसर्ग है । पूर्ववचनानुसार मिथ्याकथा विज्ञान मानव विचार को मूर्तिमान करने का ही फल है । अतः मिथ्याकथाविज्ञान का अमूर्त से बहुत बड़ा और पूरा पूरा भेद है ।

तत्त्वज्ञान का उद्देश्य, हरबर्त स्पेन्सर के मतानुसार चरम सत्यताओं या नियमों का स्पष्टीकरण है । यह सत्य जहाँ तक ये अन्तिम हैं, अवश्यमेव अति व्यापक होने चाहिए । एक ही नियम के अधीन व्यक्तिगत तथ्यों का समुदाय जितना विशाल होता है, अथवा बहुपरिमित और प्रारम्भिक क्षेत्र पर कार्य करने वाले सूक्ष्म उपनियमों से अन्तिम नियम का अन्तर जितना अधिक होता है, उसका प्रकट करना उतना ही अधिक निगूढ़ और उतना ही कम स्थूल हो जाता है । अतएव तत्त्वज्ञान और मिथ्याकथाविज्ञान इस विषय में परस्पर विरोधी है । तत्त्वज्ञान निगूढ़ है, वह सामान्य शब्दों और चरमसूत्रों मे प्रकाशित किया जाता है, मिथ्याकथाविज्ञान स्थूल है वह स्थूल प्राकृतिक शब्दों में प्रकाशित किया जाता है । यह प्राथमिक विषय में और विषयों के रूपों को प्रदर्शित करता है । अतएव तत्तवज्ञान और दार्शनिक विचारों के वेदों में पाये जाने से बढ़कर देवमाला शैली के मूल्य का विध्वंसक और कोई नहीं । वेद तत्तवज्ञान की पुस्तके हैं, देवमाला की नहीं, यह बात केवल इसीलिये स्वीकृत न होनी चाहिये क्योंकि संस्कृत के एक सुप्रसिद्ध अध्यापक और विद्वान्, इस बात का प्रतिपादन करते हैं कि मानव विचार और युक्ति का बीज वेदों में है पर उनके अनुसार उस बीज का विस्तार काण्ड के तत्त्वज्ञान में हुआ है, प्रत्युत अन्य और अधिक विश्वसनीय आधार और प्रमाणों पर इसे मानना चाहिए । संस्कृत वाङ्मय में तत्त्वज्ञान का विकास देवमाला की वृद्धि का पूर्ववर्ती है । उपनिषद् और दर्शन जो प्रतिज्ञापूर्वक तत्त्वज्ञान के ग्रन्थ हैं और निश्चय ही वेदों के निकटतर हैं, प्रतिज्ञापूर्वक तत्त्वज्ञान के ग्रन्थ हैं और निश्चय ही वेदों के निकटतर हैं, कालक्रमानुसार पुराणों से, जो कि भारतीय मिथ्याकथा-विज्ञान

साहित्य की साक्षात् मूर्ति हैं, पूर्व के हैं और पीछे के नहीं । वेदों से तत्त्वज्ञान का विकास हुआ है वेदमाला का नहीं । भारतीय साहित्य के इतिहास में कम से कम मिथ्याकथाविज्ञान से तत्त्वज्ञान का जन्म नहीं हुआ परन्तु तत्त्वज्ञान देवमाला का पूर्ववर्ती है । मिथ्याकथाविज्ञान सत्य और पवित्र धर्म या तत्त्वज्ञान के विकृत अवशेष और मिथ्याकथाविज्ञान सत्य और पवित्रं धर्म या तत्त्वज्ञान के विकृत अवशेष और शरीर से बाहर को निकाली हुई गिलटी की तरह कहाँ तक उठ सकता है, यह बात अब कदाचित् पर्याप्त स्पष्ट हो चुकी है । अब षड्दर्शन, सारे के सारे, वेदों पर स्थित हैं । और अपने आप को वेदों के साक्षात् उद्धरणों से पुष्ट करते हैं । इसलिए तत्त्वज्ञान वेदों से न केवल विकसित किया गया है प्रत्युत सारतः निकाला गया और विकसित किया गया या बाद में सम्बन्धित किया गया है । एक और केवल एक, आक्षेप है जो उपर्युक्त विचारों के विरुद्ध खड़ा किया जा सकता है । वह यह है कि वेदों के विविध विभाग विविध कालों से सम्बन्ध रखते हैं । क्योंकि जहाँ कई विभाग मिथ्याकथा सम्बन्धी हैं वहाँ दूसरे निश्चय ही तत्त्वीन सम्बन्धी हैं । हम यहाँ वह नहीं कहेगे जो पूर्व से ही प्रसिद्ध हैं । अर्थात् चाहे कैसा ही हो, वेदों की एक पंक्ति भी दर्शनों या उपनिषदों के पीछे नहीं । पुराणों का तो कहना ही क्या ? वेदों के विविध विभागों के निर्णीत कालो में कितना ही अधिक अन्तर क्यों न हो, कृत्रिम तर्क का कोई विस्तार उन्हें पौराणिक समय के साथ नहीं मिला सकता । इन विवेचनाओं से स्वतन्त्र जो फिर भी आवश्यक हैं, वेदों के लिए विविध कालों का निर्णय करना ही देवमाला क्रम की न्यूनता और आंशिक रूप को सिद्ध करता है । देवमाला क्रम की सच्चाई वेदों के भागों के पृथक्त्व पर निर्भर है । वेद समष्टि रूप से इस प्रकार का उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते, किन्तु उनके अलग अलग खण्डों से इसकी कुछ झलक दिखाई देती है । परन्तु हमारे पास इन खण्डों के विच्छेद करने की या समानभाव पिण्ड को तोड़ने की क्या युक्ति है ? केवल यही कि वे दो भिन्न कालों से सम्बन्ध रखते हैं । अब ऐसी प्रतिज्ञा कि यह खण्ड दो भिन्न कालों से सम्बन्ध रखते हैं स्वयं देवमाला शैली की अपर्याप्ति पर आश्रित है । यदि वे सारे वेदों की एक ही देवमाला शैली की अपर्याप्ति पर आश्रित हैं । यदि वे सारे वेदों की एक ही देवमाला शैली से व्याख्या कर सकते तो उन्हें पृथक् पृथक् करने की कोई आवश्यकता न होती । ऐसा वे न कर सकते थे, अतएव विच्छेद किया । देवमाला शैली के आंशिक रूप का दोषमुक्ति विविध कालों के निर्देश की सत्यता पर निर्भर है, पर इस निर्देश के लिए देवमाला शैली की अपर्याप्ति के सिवाय और कोई प्रमाण नहीं । तब, इस प्रकार, देवमाला शैली का आंशिक रूप स्वभावतः स्वयं पर्याप्त समझा जाता है । तब इस विषय के आरम्भ में गिनी हुई तीन शैलियों में पहली, स्वतन्त्र विचारी हुई, इससे कुछ अच्छी नहीं ठहरती, और अन्ततः वेदों के दार्शनिक स्वरूप के मुकाबले में अनुत्तीर्ण होती है । अब इस द्वितीय शैली का विचार करेंगे ।

पुराने साहित्यक लेखों के खोलने की अति सरल रीतियों में से एक प्रक्कालीन या एतिहासिक शैली है । इसका काम है, हस्तगत लेखों के व्याख्यान और स्पष्टीकरण के लिए, उन्हें, यथासम्भव, उस काल के सामान्य साहित्य और पुस्तकों के निकट ले आना । इस स्पष्ट कारण से, कि प्रत्यक्ष सदा उच्छिष्ट ज्ञान से उत्तम समझा जाता है, इस शैली का प्रत्यक्ष के सम्मुख कोई मूल्य ही नहीं । अब जहाँ तक ऐतिहासिक खोज का क्षेत्र है, जहाँ तक कि गत शताब्दियों के अध्ययन का सम्बन्ध है, वहाँ एक पुरुष को सब कुछ जानने के लिए, निस्सन्देह, उसी काल सम्बन्धी साहित्य और ऐतिहासिक लेखों का आश्रय लेना पड़ता है जिसके साथ कि उसका सम्बन्ध है और उन अवस्थाओं की परीक्षा, जो ऐसी साक्षी को मानवीय और इस पर किये गये श्रम को सफल करती हैं, ऐतिहासिक खोज के नियमों को स्थापित करने के लिए आवश्यक होती है । इस रीत्यनुसार पुरातन घटनाओं के हमारे ज्ञान की सत्यशीलता दो बातों पर निर्भर है, पहले तो तत्कालीन घटना या घटनाओं से सम्बन्ध रखने वाले लेखों की, जिन्हें कि हम प्राप्त करते हैं, यथार्थता पर और दूसरे लेखों के हमारे व्याख्यान की यथार्थता पर । पहली बात की चीर-फाड़ हम छोड़ देंगे, क्योंकि अपनी साक्षी के सम्मान के लिए वह ऐसे नियमों की उत्तरदायिनी है जो कि हमारे विषय में परिमाण में नहीं आते । हमारा सीधा सम्बन्ध तो लेखों की व्याख्या के साथ है ।

ऐतिहासिक या प्राक्कालीन शैली की अपूर्वता इस बात में है कि इससे पुराने लेखों की व्याख्या में हमें अशुद्धि का कम भय रहता है । इसका कारण इस प्रकार समझाया जा सकता है जीवित या इन्द्रिय-युक्त वृद्धि वाली दूसरी सब वस्तुओं के समान, भाषा निरन्तर विकारों के अधीन है । यह विकार कुछ तो स्वरसम्वाद सम्बन्धी इन्द्रियों के विकास के नियमों के अधीन है, कुछ विदेशी भाषाओं के आगमन और सम्मिश्रण की बाह्य अवस्थाओं के और कुछ मानव विचार ही के विकास के नियमों के अधीन है । इस ओर दूसरे कई कारणों से, सारी जीवित भाषाएँ प्रतिदिन बदल रही हैं । यह परिवर्तन एकत्र होते रहते हैं और एक पर्याप्त काल के पीछे अतीव भिन्न यद्यपि सजातीय, भाषाओं को उत्पन्न करते हुए प्रतीत होते हैं । अतएव कोई वस्तु, चाहे विचार हो या दर्शन-शास्त्र, जो भाषा सम्बन्धी वस्त्र पहने हुए हैं, उसके सत्य व्याख्यान के लिए आवश्यक है कि वे नियम, जो भा,ा सम्बन्धी विकारों और शब्दों के अर्थों के विकारों की नियन्त्रित करते हैं, ध्यानपूर्वक पढ़े जायें । अन्यथा, हमारी व्याख्या भ्रम और काल गणना प्रमाददोष से दूषित होगी । आओ, एक वास्तविक दृष्टान्त को लें, अर्थात् रोमन प्रजातन्त्र राज्य का विषय सोचें । रोमन प्रजातन्त्र राज्य के काल में, मुद्रणालय अज्ञात था, समाचार पत्र अश्रुत थे, लोकोमोटिव इन्जन्स का स्वप्न न था, और दूसरे प्रकार, जो मानव विचार या लोकोमोटिव इन्जन्स का स्वप्न न था, और दूसरे प्रकार, जो मानव विचार या तर्क के अविनाशी संस्कार के संचार को उत्पन्न या सरल करते हैं, विचारे न गये थे, और जब फोरमΣ मात्र सब श्रोताओं के आश्रय का स्थान था, और वाक् शक्ति आधुनिक समय की अपेक्षा सर्वथैव भिन्नार्थ रखती थी, तब सेनेट अर्थात् अन्तरंग सभा उस संस्था को न जताती थी जिसे कि वह अब जताती है । जैसी 'जाति' उन दिनों में थी उसका प्रजातन्त्र या प्रजासत्तात्मक राज्य आजकल के कुछ कुछ अल्प स्वाविक राज्य के समान होगा, यद्यपि कई आवश्यक अंशों में इससे भी बहुत भिन्न होगा । अब, एक पाठक, जो रोमन प्रजातन्त्र राज्य सम्बन्धी काल के साहित्य का पाठ कर रहा है, वह उस काल सम्बन्धी अपने ज्ञान को वास्तविक घटनाओं के विपरीति पाएगा, यदि अपने पाठों में अनिर्दिष्ट होने के कारण, प्रजासत्तात्मक प्रजातन्त्र और दूसरे ऐसे शब्द उनके मन के सामने वह अर्थ ले आवें कि जिन्हें यह आज जानते हैं । ऐसा ज्ञान परस्पर असम्बन्ध होगा, दो युगों की खिचड़ी होगी औ फिर ऐसा होगा कि जो सूक्ष्म परीक्षा पर प्रलापमात्र कहा जायेगा ।

तीसरे समकालीन शैली है । इतिहास के क्षेत्र में इस रीति के प्रयोग निस्सन्देह, विविध और आवश्यक हैं । परन्तु तिथियों के निर्णीत करने और पुराणों, दर्शनों, उपनिषदों, मनु, रामायण और महाभारत इत्यादि के समयों का अनुक्रम निरूपण करने में भी इसके प्रयोग कुछ कम आवश्यक नहीं । अनेक अध्यापकों

ने इन ग्रन्थों की तिथियाँ निर्णीत करने का, उनमें किन्हीं सुनिर्णीत स्थिर ऐतिहासिक बातों को, प्रायः वृथा ढूँढ़ते हुए, व्यर्थ श्रम किया है। परन्तु इन तिथियों को निर्णीत करने में संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक विकास का ज्ञान कहीं बढ़ कर आवश्यक है। पुराणों की संस्कृत महाभारत और दर्शनों की संस्कृत से इतनी भिन्न है और फिर दर्शनों की संस्कृत उपनिषदों की संस्कृत से इतनी भिन्न है कि इन सबों में एक स्पष्ट सीमापरिच्छेद रेखा आसानी से खींची जा सकती है। यह दूसरे से मिलाया नहीं जा सकता।

यह अत्याश्चर्य और विस्मय की बात है कि वेदों के विषय में यह जिस शैली के कि गुण इतने प्रत्यक्ष और स्पष्ट हैं और जो इतिहास के क्षेत्र में इतनी सुप्रमाणित है, प्रयुक्त न की गई हो, या ऐसी शिथिलता और असावधानता से प्रयुक्त की गई हो जिससे संस्कृत के कई अति सुप्रसिद्ध अध्यापकों के वेदों के आधुनिक व्याख्यान समझ से अत्यन्त परे और अनर्थक बन गये।

वेदों के विषय में संस्कृत के समस्त विज्ञ अध्यापकों ने, जिनके कि वेदों के भाषान्तर इतने प्रसिद्ध हैं, अपना जीवन, महीधर, रावण और सायण के भाष्यों से लिया है जो लेखक निश्चय ही वेदों के काल से बहुत पीछे के हैं और हमारे अपने ही काल से आ मिलते हैं। यह लेखक स्वयं वैदिक संज्ञा विज्ञान से इतने अपरिचित थे जितने कि हम हैं। उनके वैदिक संज्ञाओं के व्याख्यान, उनके अपने समयों में प्रचलित अर्थों के अनुसार, उतने ही अशुद्ध थे, जितने कि हमारे अध्ययन में आने वाले, पुराने रोम सम्बन्धी प्रजासत्तात्मक आदि शब्दों के होंगे। महीधर और सायण हमारी अपेक्षा कुछ सुस्थित न थे। यह अद्भुत प्रतीत होता है कि सायण और रावणकृत वेद व्याख्यानों के स्वीकार करने में, हमारे आधुनिक संस्कृत अध्यापक, यह अमूल्य सिद्धांत भूल गये कि वेदों के व्याख्यानों के लिए हम जितना वेद सम्बन्धी-काल के साहित्य के समीप पहुँचेंगे, उतने ही हमारे व्याख्यान के संभवतर और शुद्धतर होने की अधिक सम्भावनाएँ होगी। इन अध्यापकों ने वेदों की जो तिथि निश्चित की है, उसके अनुसार उनका वेदों का व्याख्यान एक ऐसे काल के साहित्य पर स्थित होगा, कि जो वेदों के काल और भाव से इतना विरुद्ध है कि भ्रम और भ्रान्ति के सिवा और कुछ उत्पन्न नहीं कर सकता।

किसी निष्पक्ष पाठक की दृष्टि में, जिसने कि इस प्रसंग पर गोल्डडस्टकर की गवेषणाओं का अध्ययन किया है, तिथियों का सारा भवन भस्मीभूत हो जाता है, और आधुनिक स्वीकृत काल-निर्णय-विद्या की सारी शैली अनायास उलटी जाती है। इस विषय पर सर्वोत्तम (और वे हैं वस्तुतः, निकृष्टतम) प्रामाणिक पुरुषों के अनुसार ईसा के पाँच छः सहस्त्र वर्ष पूर्व के कोई ग्रन्थ थे, यह प्रतीत नहीं होता। सारा संसार ८,००० वर्षों के अन्दर लपेटा जाता है। मनुष्य के मानसिक व्यवसाय का सारा क्षेत्र ईसा से ६,००० वर्ष पूर्व में एकत्र किया हुआ प्रतीत होता है।

इन विचारों की उपेक्षा करते हुए आओ, हम सीधा वेदों के विषय को लें। शतपथ और निरुक्त, निःसन्देह, सायण, रावण और महीधर के भाष्यों से बहुत पूर्व काल के ग्रन्थ हैं। हमें तो, पुराणों के, और महीधर के काल की अपेक्षा, वेदों के व्याख्यान के लिए उनका और उपनिषदों का आश्रय लेना चाहिए।

उपनिषदें अद्वैत (एकेश्वरवाद) की शिक्षा देती हैं। उपनिषदों और शतपथ में कहा, इन्द्र, मित्र और वरुण देवताओं को जानते हैं और देव को नहीं ? निरुक्त भी वेदों के संज्ञा-विज्ञान सम्बन्धी स्पष्ट नियम स्थिर करता है कि जिनकी आधुनिक अध्यापकों ने सर्वथा उपेक्षा की है।

निरुक्तकार अपने ग्रन्थ के आरम्भ में ही बलपूर्वक शिक्षा करता है कि संज्ञायें जो वेदों में प्रयुक्त हैं वे रूढ़ि (सांकेतिक, मनघड़न्त, और संहत अर्थ वाली संज्ञाओं के) मुकाबिले में यौगिक (धातुनिष्पन्न अर्थ वाली) हैं। हम किसी आगे वाले अवसर पर निरुक्त से सम्पूर्ण वाक्य उद्धृत करेंगे और इस सिद्धान्त की अधिक अच्छी व्याख्या करेंगे। यहाँ तो हमने केवल वही कहा है जो निरुक्त की प्रधान प्रतिज्ञा करेंगे। यहां तो हमने केवल वही कहा है जो निरुक्त की प्रधान प्रतिज्ञा है। इस प्रतिज्ञा का समर्थन महाभाष्य और संग्रह सहित इस विषय के दूसरे प्राचीनतर ग्रन्थ करते हैं।

वेदों के संज्ञा-विज्ञान के प्रश्न के विचारने में जिस मुख्य विधि का हमने अनुसरण किया है, यदि वह ठीक है तो जिस परिणाम पर हम पहुँचे हैं, वह निम्नलिखित जिज्ञासा पर पहुँचाता है :-

इस विषय पर पुरातन वैदिक विद्वानों की क्या सम्मति है ? क्या निरुक्त, निघण्टु, महाभाष्य और संग्रह के लेखक, और दूसरे पुराने भाष्यकार आधुनिक भाष्यकारों अर्थात् रावण, सायण, महीधर और दूसरों से जिन्होंने कि गत कुछ दिनों से उसी विधि का अनुसरण किया, एकता रखते हैं, या वे आधुनिक लेखकों से मतभेद रखते हैं और यदि उसमें भेद है तो जैसा पूर्वोक्त वचनों ने स्पष्ट कर दिया होगा, विश्वास अवश्य ही पुराने भा,ष्यकारों पर करना चाहिए, अस्तु, आओ, इस विषय पर पुराने ग्रन्थकारों के विचारों की परीक्षा करें।

स्थूल रूप से कहें तो संस्कृत भाषा में तीन श्रेणियों के शब्द हैं अर्थात् यौगिक, रूढ़ि और योग रूढ़ि श्द। यौगिक शब्द वह है कि जे धातु निष्पन्न अर्थ रखता है अर्थात् जो केवल अपने धात्वर्थ और अनुबन्धों के प्रभाव से हुए हुए विकारों के साथ अपने अर्थ को जनाता है वस्तुतः रचना सम्बन्धी अंग, जिनमें से कि शब्द संयुक्त किया जाता है। शब्द के शब्दार्थ के लिए सहारा और केवल पता दे देते हैं। अब इनका ज्ञान हो जाता है तो शब्द के अर्थ को पूर्ण करने के लिए और कोई अंग आवश्यक नहीं होता। यदि आधुनिक तर्कशास्त्र की भाषा में कहें तो शब्द सारा अर्थगर्भ है और अपने गर्भितार्थ के प्रभाव से ही अपना निर्देश निश्चित कता है। रूढ़ि शब्द किसी नियत संहत सांकेतिक अर्थ को, अपने किन्हीं गर्भितार्थों के प्रभाव से नहीं प्रत्युत मनघड़न्त नियममात्र के प्रभाव से जानता है। एक यौगिक शब्द की अवस्था में हम किसी पदार्थ के नाम पर सामान्यवाद की विधि से पहुँचते हैं। हम देखते, चखते, छूते, सूँघते और पदार्थ पर उन विविध साधनों से काम करते हैं, जिन्हें कि मनुष्य प्रत्यक्ष पदार्थों के गुणों के जानने के लिए रखता है। हम इन प्राप्त इन्द्रियगोचर संस्कारों की अपने मनों में पूर्व संरक्षित और हमारे भूत-ज्ञान के बनाने वाले इन्द्रियगोचर संस्कारों से तुलना करते हैं। हम दोनों से समानताओं को ढूँढ़ते हैं और इस प्रकार एक सामान्य या एक व्यापक विचार प्राप्त करते हैं। इस व्यापक विचार को हम एक धातु एक आदिम विचार या सांयोगिक विधि द्वारा पहुँच कर एक संहत नाम देते हैं। अतएव अन्ततः इस प्रकार बना हुआ शब्द मनुष्य के मानसिक व्यवसाय के सारे इतिहास को अपने अन्दर रखता है। एक रूढ़ि शब्द की अवस्था में विधि बहुत भिन्न है। हम सामान्यता नहीं लाते और न ही इसलिए किसी संयोग की आवश्यकता है। हम केवल स्थूलतया एक पदार्थ या पदार्थों की श्रेणी को दूसरे पदार्थों से पहचानते हैं और इस एक स्वच्छन्द प्रकार से स्वरसंवादी मोहर लगा देते हैं। एक व्यक्ति, स्थूलतया दूसरों से पहचाना जाने के लिए, स्वच्छन्दता से राम कहा जाता है और दूसरा कृष्ण, ऐसे ही एक पदार्थ स्वच्छन्दता से खट्वा कहा जाता है और दूसरा माला इत्यादि। यहाँ, हम पदार्थ के सामान्य सम्बन्ध में आये बिना,

पहचान मात्र से उस पदार्थ का निर्देश करते हैं जिसे कि हम नाम दे रहे हैं ।

शब्दों की तीसरी श्रेणी अर्थात् योगरूढ़ि वह है जिसमें कि दो शब्दों का संयोग सम्बन्ध द्वारा एक समास बनाया जाता है । यह समस्त शब्द इन दोनों शब्दों के संयोग के प्रभाव से एक तीसरी वस्तु को जनाता है । ऐसे शब्द दृश्य चमत्कार के किसी सम्बन्ध या इतरेतर प्रभाव को दर्शाते हैं । उदाहरणार्थ कमल का सम्बन्ध धारणकर्त्ता कीचड़ से उत्पन्न होने का है । अतएव कमल को पंकज कहा जाता है (पंक-कीचड़) और ज-उत्पन्न होना) ।

अब महाभाष्य का मत है कि वैदिक संज्ञा विज्ञान यौगिक है ।

''नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्'' ।

''नैगम रूढिभवं हि सुसाधु'' । महा० अ० ३ । पा० ३ । सू० १ । जिसका अर्थ है कि :-

शब्द व्युत्पत्ति विद्या का कथन कते हुए शब्द तीन प्रकार के हैं अर्थात् यौगिक, रूढ़ि, और योगरूढ़ि । परन्तु यास्क आदि निरुक्तकार और वैयाकरणों में शाकटायन, सब शब्दों को धातु से निष्पन्न अर्थात् यौगिक और योगरूढ़ि ही मानते है और पाणिनि आदि उन्हें रूढ़ि भी मानते हैं । परन्तु सब ऋषि और मुनि, पुरातन ग्रन्थकार और भाष्यकार निःशेष, वैदिक संज्ञाओं को यौगिक और योगरूढि ही मानते हैं तथा लौकिक शब्दों में रूढि भी मानते हैं ।[८]

उपर्युक्त महाभाष्य का स्पष्ट और निश्चित वचन है कि वैदिक संज्ञाएं सब यौगिक हैं । निरुक्त, संग्रह और दूसरे पुराने ग्रन्थों से, अनेक और लम्बे उदाहरण देकर यह सिद्ध करना कठिन नहीं है, कि वह सारे वैदिक शब्दों के स्वरूप के बारे में सहमत हैं ।

तब, इस विषय के विस्तार में न जाकर, यह माना जा सकता है कि पुरातन कालों के वैदिक ग्रन्थकार आधुनिक ग्रन्थकारों से सहमत नहीं है । यह अद्भुत वार्ता प्रतीत होती है कि हमारे आधुनिक संस्कृताध्यापक, निपुण भाषातत्त्वज्ञ और माने हुए प्राचीन वस्तुशोधिक इतने बल से ''प्राक्कालीन शैली'' का मूल्य प्रतिपादन करते हैं और फिर इस भारी प्रश्न के प्रारम्भ में ही भारी भूल कर जाते हैं ।

उपर्युक्त वचनों के उपरान्त, हमारे आधुनिक हरिवर्षीय पंडितों को वेदों में देवमाला सम्बन्धी उपन्यासों की तलाश में, अथवा ''उस असभ्य गीतों की पुस्तक'' में अशिष्ट पीतल काल या सुवर्ण काल की बातों की खोज में मग्न देखकर कुछ भी आश्चर्य नहीं होता ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से

श्रीमती प्रतिभा गोजे को विनम्र श्रद्धांजलि

स्वतंत्रता सेनानी एवं आर्य जगत के प्रसिद्ध हस्ति श्री लक्ष्मणरावजी गोजे की बहु डॉ. गंगाधर राव गोजे की धर्मपत्नी श्रीमति प्रतिभा गोजे का देहान्त दि. ४ फरवरी २०१६ को उनके स्वगृह बिचकुंदा में हुआ । उनकी अंत्येष्टी बिचकुंदा में स्वयं के खेत में वैदिक रिती से कि गई, जिसमें आर्य समाज के वहुत से लोगोंने भाग लिया । वे जीवन पर्यन्त वैदिक धर्म का पालन किया । महिला होते हुए भी वे स्वयं जाती प्रथा को तोड़कर विवाह किया तथा अपने पांच पुत्रीयों तथा दो पुत्रों का विवाह भी जाती प्रथा को तोड कर किया । वे एक आदर्श नारी के रूप में जीवन व्याथित किया । आर्य जगत के जितने भी विद्वान आर्य समाज बिचकुंदा में आते, थे उन सभी की भोजन व्यवस्था व आतिथ्य सत्कार वे स्वयं बडे ही उत्साह एवं आदर से करती थी । उनकी आर्य समाज पर अटूट श्रद्धा थी । उनका व्यवहार भी सभी के साथ बडा ही मिलनसार था । ऐसी आदर्श नारी के मृत्यू से आर्य समाज बिचकुंदा की बडी क्षती हुई है जिसकी पूर्ती होना भविष्य में असम्भव है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत श्रीमती प्रतिभा गोजे जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को शांति एवं परिवार जन को दुःख सहन करने का साहस प्रदान करे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से

पूर्व प्रधान आर्य समाज इन्दूर व आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान

श्री के. सूर्य प्रकाश जी की

माताश्री राजूबाई को विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य समाज के इन्दूर के पूर्व प्रधान व वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के उपप्रधान श्री के. सूर्यप्रकाशजी की माताजी श्रीमती राजूबाई का २३ फरवरी २०१६ को अकस्मात निधन हो गया । माताजी की उम्र पूरे १०० वर्ष की थी । सूर्यप्रकाशजी की माताजी का परिवार के लिए और आर्य समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उनका अकस्मात निधन परिवार के लिए व समाज के लिए बहुत ही क्षतिपूर्ण है और इस कमी को पूरा करना असम्भव है । आर्य प्रतिनिधि सभा माताजी के निधन पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है और परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति और सद्गति प्रदान करे तथा परिवार जनों को साहस प्रदान करें ।

కుటుంబం సుఖంగా ఉండాలంటే

- చలవాది సోమయ్య

ఈశ్వర చంద్ర విద్యాసాగరుల మాతృ భక్తి

పండిత ఈశ్వర చంద్ర విద్యాసాగరుల వారి ద్వారా కూడ మనకు పితృభక్తి మహిమ తెలియగలదు. శ్రీ ఈశ్వర చంద్ర విద్యాసాగరుల వారు కళాశాలలో ప్రొఫెసర్‌గా ఉండేవారు. ఆరోజులలో వారి తల్లిగారి ఆరోగ్యం బాగుగాలేదని ఆయనకు త్ంతి వార్త అందింది. కళాశాలవారు శలవు ఇవ్వనందున ప్రొఫెసర్ పదవికి రాజీనామ ఇచ్చి మాతృసేవకై ఇంటికి వచ్చాడు. అధ్యపక వృత్తికి త్యాగపత్రమెందుకిచ్చావని ఒకరు ప్రశ్నించినపుడు "ఉపాధ్యాయ పదవి మరొకటి ఎక్కడైనా లభిస్తుంది. కాని తల్లిపోతే మరలా లభించదు కదా"? అని జవాబిచ్చాడు.

భార్యా భర్తలు పరస్పరం ప్రేమ, సహృదయంతో వర్తించాలి :-

"జాయా పత్యే మధుమతీం వాచం వదతు శాన్తివామ్"

పత్ని తన పతితో ఎల్లప్పుడు - మృదు మధురంగా, శాంతి యుతమైన మాటలనే మాట్లాడాలి. అలాగే భర్తకూడ తన పత్నితో సదా మధుర భాషణనే చేయాలి. వేదాదర్శము చెప్పినది చూడండి.

అక్ష్యౌ నౌ మధు సంకాశే అనీకం నౌ సమఞ్జనమ్ ।
అంతః కృణుష్వ మాం హృది మన ఇన్నౌ సహాసతి ॥ - అథర్వ 7-36-1

పరమేశ్వరా ! పతి పత్నులమైన మా ఇరువురి నేత్రాల్లో ఘోరత్వం, క్రూరత్వం ఉండరాదు. ప్రేమార్ద్రదృష్టులే మాకుండాలి. ఆ చూపులు మధు సమ్మిశ్రితంలై ఉండాలి. ఒకరినొకరం చూచుకున్నపుడు మాముఖాలు మందహాసంతో వికసించాలి. పరస్పరం ఒకరినొకరు హృదయంలో దాచుకోవాలి. మా ఇద్దరి మనస్సులు ఒకటి కావాలి.

భర్త విషయంలో భార్య ఎలా వ్యవహరించాలో ఒక కవి మాటలు ఎంత ఆదర్శంగా ఉన్నాయో చూడండి.

"భర్త నిన్ను మనసారా ప్రేమించకపోతే - ఆ భేదాన్ని ఎవరికీ తెలియ నీయకు. అతడు నిన్ను తగినట్లు చూడకపోయినా అదే సౌభాగ్యమనుకో. నీతో స్నేహంగా లేక పోయినా, నీవు స్నేహంగా ఉండు. భార్య చూపించే సహనం వలన ఒకనాటికి భర్త పాషండ హృదయం కూడ కరిగి నీరైపోతుంది."

గృహంలోని బిడ్డలు పెద్దవాళ్ళను అనుకరిస్తారు. కాబట్టి పెద్దలైన తల్లిదండ్రులు కడుజాగ్రత్తగా పరస్పరం వ్యవహరించుకోవాలి. భార్యా భర్తలు ఒకరినొకరు ప్రేమగా చూచుకుంటూ మధుర సంభాషణలతో మెలగాలి. చిన్న చిన్న విషయాల్లో కోపతాపాలు చూపుతూ కఠోరంగా మాట్లాడరాదు. ఒక వేళ భార్యా భర్తలు పోట్లాడుకొనవలసి వస్తే పిల్లల ఎదుట ఆపనులు చేయరాదు. తల్లిదండ్రులు బూతుమాటలు మాట్లాడుతూ పోట్లాడు కుంటూ ఉంటే వారిని చూచి పిల్లలు కూడ అవి నేర్చుకుంటారు. పోట్లాటలకు అలవాటు పడతారు.

ఒక జమీందారు కుమారుడు నోరెత్తితే బూతులు ప్రయోగించేవాడు. ఒక పెద్ద మనిషి పిల్లవాణ్ణి పట్టుకొని తండ్రి వద్దకు తీసికొని వెళ్ళి - మీ పిల్లవాడు నోటి కొచ్చినట్లు బూతులు మాట్లాడుతున్నాడు. వీడిని సరిచేయుండని చెప్పాడు. జమీందారు పిల్లవాని చెవిని పట్టుకొని ఒరే ! మొద్దుముండాకొడకా! నీ నోటికి బూతులెట్లా వచ్చాయిరా అని బెదిరించాడు. దీనివలన తండ్రిని బట్టే ఆ పిల్ల వానికి బూతులు వచ్చాయని మనకు తెలుస్తుంది. అందువలన తల్లిదండ్రులు తమ కల్యాణం కొఱకు తమబిడ్డల మేలు కొరకు, కుటుంబ కల్యాణం కొఱకు పరస్పరం సదా మధురంగా సంభాషించుకోవాలి. వేదంలోని ఈ సందేశాన్ని శ్రద్ధగా ఆలకించండి.

మన వాక్కు చాల శక్తి వంతమైంది :-

ఇయం యా పరమేష్ఠినీ వాగ్దేవీ బ్రహ్మసంశితా ।
యయైవ ససృజే ఘోరం తయైవ శాన్తిరస్తునః ॥
- అథర్వ 19-9-3

పరమేశ్వరుడు మనకిచ్చిన వాక్కు, జ్ఞానం తీక్ష్ణంగాను, అత్యంత శక్తి శాలిగాను ఉన్నది ఈ వాక్కునుపయోగించి ఘోరాతి ఘోరమైన ప్రమాదాలను సృష్టించుకోవచ్చు లేక ఈ వాక్కుద్వారా శాంతిని స్థాపించుకొన వచ్చును.

ప్రసన్నమైన మధుర వాక్కులతో శత్రువులను కూడ మిత్రులుగా చేసికొనగలం. మంచి మాటల ద్వారా మిత్రులవుతారు. కఠోర వాక్కుల ద్వారా శత్రువులవుతారు.

శబ్ద బరాబర ధన నహీ, జో కోయీ జానే బోల్ ।
హీరా తో దామోం మిలే, శబ్ద కా మోల్ న తోల్ ॥ - కబీర్.

మాటలతో సమానమయిన ధనం లేదు. కాబట్టి తెలిసి ఆచి తూచి మధురంగా మాట్లాడడం నేర్చుకో. వజ్రం కొనాలంటే ధనం కావాలిగాని మంచి మాటల యొక్క విలువ ఇంతని చెప్పలేము. కాబట్టి మనస్సును బాధించని మాటలనే ప్రయోగించాలి. దీని వలన ఇతరులు ప్రసన్నులవుతారు. మనకు కూడా శాంతి కలుగుతుంది.

సోదర సోదరీమణులేలా ఉండాలి :-

ఇంతవరకు పిత పుత్రుల మధ్య తల్లి బిడ్డల మధ్య భార్యభర్తల మధ్య సంబంధం ఎలా ఉండాలో తెలిసికున్నాం. ఇప్పుడు పరస్పరం సోదరుల మధ్య, సోదరి సోదరి మధ్య, సోదరుడు సోదరి మధ్య సంబంధం ఎలా ఉండాలో తెలిసి కుందాం. ఈవేద మంత్రం చూడండి.

మాభ్రాతా భ్రాతరం ద్విక్షన్ మా స్వసార ముత స్వసా ।
సమ్యఞ్చః సవ్రతా భూత్వా వాచం వదత భద్రయా ॥ - అథర్వ. 3-30-3

భ్రాతా=సోదరుడు, భ్రాతరమ్=సోదరుని, మా ద్విక్షన్=ద్వేషించ కుండుగాక ! ఉత=మరియు, స్వసా=సోదరి, స్వసారమ్=సోదరుని, మా=ద్వేషించ కుండుగాక ! అదేవిధంగా, సోదరుడు

సోదరిని, సోదరి సోదరుని పరస్పరం ద్వేషించకుందురు గాక. కుటుంబ సభ్యులందరు, సమ్యఞ్చః=చక్కటి ప్రేమ, ఆదేశాలతో కూడినవారై, సవ్రతాః=ఒకరు మరొకరికి అనుకూలంగా ఒకే మనస్సుగలవారై, ఒకే వ్రతము, భూత్వా= కలిగి, భద్రయా=శుభము, కల్యాణ కారకరీతిలో ఒకరు మరొకరితో, వాచమ్= సుఖదాయకమైన వాక్కును, వదత= మాట్లాడుదురుగాక !

1. భ్రాతా భ్రాతారం మాద్విక్షన్ :-

సోదరుడు సోదరుని ద్వేషించరాదు. సోదరులు పరస్పరం వివాద గ్రస్తులు కారాదు. ఇది వేదసందేశం. కాని నేటి పరిస్థితి ఎలా ఉన్నది. సోదరులు పరస్పరం కసాయివారవుతున్నారు.

"నయారో - మే రహీయారీ సభాయీ యోం మే వఫాధారీ,

స దారోం మే గమర్తిశేఖ్వారీ అజబ్ యహ్ దౌరా ఆయాహై"

మిత్రులలో మిత్రత్వం లేదు. సోదరులలో పరస్పరం నమ్మకం లేదు. బంధువలలో సహనం ఓదార్పు లేదు. విచిత్రమైన కాలం వచ్చింది. ఒకానొక కవి పరమాత్మనే ఇలా ప్రశ్నించుతున్నాడు. ఓ పరమేశ్వరా ! నీ సృష్టిలో ఏంత విచిత్రం జరుగుతూ ఉంది ? సోదరుడు సోదరునికి వేరైపోతున్నాడు.

ఒకప్పుడు సోదరునికి తన సోదరుని మీద అభిమానం ఉండేది. సోదరుడు సోదరుని తన కుడి భుజంగా భావించేవాడు. ఈనాడు, నాకు సోదరుడే అవసరంలేదను కుంటున్నాడు. కారణం తండ్రికి తనొక్కడే కుమారుడైతే తండ్రి ధనమంతా తనకే లభిస్తుంది. రెండవ వాడుంటే పంచుకుంటాడు గదా ! ఒకవేళ రెండవ సోదరుడుంటే ఒకరు మరొకరి రక్తం త్రాగాలని త్వరపడుతుంటారు. రెండు గజాల భూమికై ఒకరు మరొకరి తల తీయడానికైనా వెనుకాడడం లేదు. ఇలా పరస్పరం పోట్లాడుకోవడం శుభం కాదు. ఈ వేద సందేశం వినండి.

మిథో విఘ్నానా ఉపయన్తు మృత్యుమ్ ॥

- అధర్వ. 6-32-3

పరస్పరం కొట్లాడుకొనేవారు మృత్యు దేవతకు ఆహారమౌతారు. తలలు త్రెంచుకోవద్దు. ద్వేషాన్ని వదలి ప్రేమతో జీవించండి.

సోదరులెలా ఉండాలో శ్రీరాముడు, లక్ష్మణుడు మరియు భరతుణ్ణి చూచి మనం నేర్చుకొనవలసి ఉంది.

సోదరులెలా ఉండాలే శ్రీరామాదుల ద్వారా నేర్చుకోగలం :-

శ్రీరాముడు, లక్ష్మణుడు, సీత వనవాసానికి వెళ్ళారు. భరతుడు మాతామహుని (తల్లి తండ్రి) ఇంటి నుండి రాగా కైకేయి ద్వారా దశరథుని మరణ వార్తను, సీతారామ లక్ష్మణులు వనవాసులైనారన్న సమాచారాన్ని విని భరతుడన్న మాటలు.

"ఓ క్రూర రాక్షసీ ! నీవు రాజ్య కాంక్షతో నాకు శత్రువైనావు. నీపతి ఘాతకురాలవు. కులనాశకు రాలవు. నీవునిజంగా రాక్షసివి. రామలక్ష్మణులు లేకుండా ఎవరి బలాన్నాశించి రాజ్యపాలన చేయగలను. ఓఘోర పాపినీ ! నీవునరకానికిపో ! ఓ దుష్టురాలా ! నీవు ధర్మాన్ని వదలి పతితురాలైనావు. పరమేశ్వరుడు నాకు మృత్యువు నిచ్చుగాక. నీవు నాకొఱకు విలపింతువుగాక ! నీవు అగ్నిలో దూకి భస్మమైపో. లేక అరణ్యానికైనా వెళ్ళు. లేక మెడకు ఉరిత్రాడు బిగించుకొని చావనైనా చావు. శ్రీరామచంద్రునికి రాజ్యాన్నిచ్చి గాని నాకళంకాన్ని తొలగించుకొనజాలను".

తనకు అన్ననుండి రాజ్యాన్నిపించిన తల్లితో భరతుడన్న మాటలివి. భారతదేశ పుత్రులకు ఇంతటి గొప్ప భ్రాతృప్రేమ, ఆదర్శాలను ఇవ్వగలిగిన భారత భూమి ధన్యురాలు.

భరతుడు తల్లిని నిందించడంతో శాంతించలేదు. శ్రీరాముని అరణ్యం నుండి తిరిగి తప్పించడానికి వెళ్ళాడు. రథాలు, అశ్వాలు, గజాలు వెంట ఉన్నాయి. కాని తాను రథాన్ని వదలి కాలినడకతో రాముని వద్దకు వెళ్ళడానికి నిశ్చయించుకొన్నాడు. కారణం - భ్రాతృప్రేమ. పెద్దవాడైన శ్రీరాముడు అరణ్యంలో పాదచారిగానే ఉంటాడు గనుక తాను రథం ఎక్కిపోవడం అనుచితమనిభావించాడు.

శృంగవేరపురంలో చేరి అచటరాముడు పడుకున్న స్థలాన్ని చూచినపుడు భరతుడు వ్యాకులచిత్తుడైనాడు. ఈక్రింది ప్రతిజ్ఞ చేశాడు.

అధ్యప్రభృతి భూమౌ తు శయి ష్యే - హం తృణేషు వా ।

ఫలమూలాశనో నిత్య జటా చీరాణి ధారయన్ ॥

- వా.రా.అయోధ్య 88-26

నేటి నుండి నేను భూమి మీదగాని, చాపమీదగాని, శయనించెదను, నిత్యం ఫలాలను, మూలాలను (దుంపలను) భుజించుతాను. జడలు ధరించి నార చీరలు కట్టుకునిటాను. ఇదీ ఆదర్శభ్రాతృప్రేమ.

చిత్రకూటంలో శ్రీరామచంద్రుని దర్శించి పాదాభివందనం చేసి గృహానికి తిరిగి రమ్మని భరతుడు ప్రార్థించాడు. ఎన్ని విధాలుగా ప్రార్థించినా శ్రీరాముడు అంగీకరించనపుడు నిరాహారదీక్ష బూని భరతుడు ప్రాణత్యాగానికి సిద్ధపడతాడు. ఇదే సోదరునికి సోదరునం దుండవలసిన ప్రేమ. భరతకుమారా ! నీవు ధన్యుడవు భారతీయ సోదరులకు సోదరప్రేమ పాఠాన్ని అందించావు. నీకు శతధా ప్రణామాలు. ఆస్తిపాస్తులకై చావుక్కు సిద్ధమై సోదరుల్ని ద్వేషించే - భారతపుత్రులారా ! ఈభ్రాతృ ప్రేమను బోధించే ఆ అమరవాణిని చదవండి. వాటితో మీ మానసికభవాల్ని పోల్చుకొని జీవించండి.

చతుర్దశ వర్షముల వనవాసం పూర్తయినా శ్రీరాముడు అయోధ్యా నగరానికి ఇంకా చేరలేదు. కాని భరతుడు వ్యాకులుడై అంటాడు. "శ్రీరాముని దర్శించాలని ఆతురపడు తున్నాను. కాని వారిదర్శనం కాలేదు. నేనెంత దురదృష్టవంతుణ్ణి నన్ను కుటిలుడని భావించి అన్నగారు రాలేదా ? ఇంకను నాప్రాణాలు పోకుండా ఉన్నవే !

పరమాత్మ అనుగ్రహం వలన శ్రీరాముడు

శ్రేష్ఠంగా వచ్చుగాక, ఆ మహాత్ముని దర్శించి కృతార్థుణ్ణగుదును గాక ! నా దగ్గర ఉంచిన రాజ్యాన్ని ఆయనకు సమర్పింతునుగాక.

ఆహా ! భ్రాతృప్రేమ కిది ఎంత గొప్ప ఆదర్శం. ఉజ్వలమైన ఈ ఆదర్శం అందరికి అనుకరణీయం గదా ! ఒక్కొక్క ఇటుకరాయి కొఱకు పోట్లాడుకొని కోర్టు వరకు వెళ్ళే సోదరులారా ! మీ నేత్రాలకున్న దేవషమనే ముసుగును తొలగించి ప్రేమ అనే అద్దాలు పెట్టుకొని భ్రాతృప్రేమ అనే సుర్మా (కాటుక) ధరించండి.

ఇది రామచంద్రుని యందున్న భరతుని ప్రేమ. ఇక భరతుని యందు శ్రీరామచంద్రునికున్న భ్రాతృప్రేమను చూడండి. శ్రీరాముడు పితృవాక్య పరిపాలనకై వనవాసానికి పోయేటపుడు అయోధ్యా పురవాసులు రాముని వెంట వెళ్ళుచుండగా చూచి వారితే రాముడన్న మాటలు.

యాప్రీతి ర్బహుమానశ్చ మయ్యయోధ్యా నివాసినామ్ ।
మత్ప్రియార్థం విశేషేణ భరతే సా విధీయతామ్ ॥ - వా.రా.అయోధ్య 45-6

ఓ అయోధ్యాపుర వాసులారా ! నా సంతృప్తి కొఱకు నామీద మీరు ఎలాంటి ప్రేమను, ఆదరాన్ని చూపుతున్నారో అంతకంటె అధికమైన ప్రీతిని, ఆదరాన్ని భరతునియందు చూపింతురుగాక !

లక్ష్మణునికి శ్రీరామునియందున్న ప్రేమ, ఆదరములు అనన్యములైనవి. దానికొక ఉదాహరణ. శ్రీరాముడు వనవాసానికి వెళ్ళే సమయంలో మాతృమూర్తి కౌసల్యాదేవి నుండి అనుమతి పొందదానికి వెళ్ళినపుడు ప్రక్కనే ఉన్న లక్ష్మణుడు అన్నమాటలు గమనించండి.

అనురక్తోస్మిభావేన భ్రాతరం దేవి తత్త్వతః ।
సత్యేన ధనుషా చైవ దత్తే నేష్టేన తే శపే ॥ -
దీప్తమగ్ని మరణ్యం వా యది రామః ప్రవేక్ష్యతి ।
ప్రవిష్టం తత్ర మాం దేవి త్వం పూర్వమవధారయ ॥
-వా.రా.అయోధ్య 29-16,17

ఓదేవీ ! సత్యము, ధనుస్సు, దానము, ఇష్టదేవతలపై ప్రమాణం చేసి చెబుతున్నాను విను. "నేను అన్ని విధాల శ్రీరాముని అధీనంలో ఉన్నాను. నాకు ఆయనయందు నిజమైన ప్రేమ ఉంది. శ్రీరాముడు కణ కణమండే అగ్నిలోగాని, లేదా అరణ్యంలోగాని ఎక్కడ ప్రవేశించినా ఆయనకంటే ముందుగా నేను ప్రవేశించినట్లు నమ్ముతల్లీ".

మరొక సన్నివేశం - వనవాసానికి తనతోపాటు లక్ష్మణుణ్ణి తీసికొని పోవదానికి రాముడు నమ్మతించనపుడు లక్ష్మణుడన్నమాటలు.

న దేవలోకాక్రమణం నామరత్వమహం వృణే
ఐశ్వర్యంవా -పి లోకానాం కామయే న త్వయా
వినా ॥ - వారా.అయోధ్య 31-5

ఓసోదరా ! నీవు లేకుండా స్వర్గంగాని మోక్షంగాని, ప్రపంచంలోని ఐశ్వర్యంగాని నాకవసరం లేదు.

ఇంకో సందర్భాన్ని చూడండి. కబంధుడనే రాక్షసుడు రామలక్ష్మణు లను బంధించినపుడు - లక్ష్మణుడు శ్రీరామునితో అన్నమాటలు.

మాం హి భూతబలిం దత్వా పలాయస్వ యథా సుఖమ్ ।
అధిగన్తాసి వైదేహీ మచిరేణేతి మే మతిః ॥
ప్రతిలభ్య చ కాకుత్థ పితృ పితామహీం మహీమ్ ।
తత్ర మాం రామ రాజ్యస్థః స్మర్తుమర్హసి సర్వదా॥ -వా.రా.అరణ్యం 69-40,41

ఓ రామా, ఈరాక్షసునికి నన్ను బలియిచ్చి, నిన్ను విడిపించుకొని, నీవు సుఖంగా వెళ్ళు. నీవు త్వరలోనే సీతాదేవిని పొందగలవని నాకు పూర్ణ విశ్వాసముంది. మన తాతల రాజ్యాన్ని పొంది, రాజ్య సినిహాసనాన్ని అదిష్ఠించినపుడు నన్ను స్మరింతువుగాక !

ఇక లక్ష్మణుని మీద శ్రీరామచంద్రు నకున్న ప్రేమ - వాత్సల్యాన్ని చూడండి. రావణుని శక్తి బాణం తగిలి మూర్ఛిల్లిన లక్ష్మణుని గురించి విలపించుతూ శ్రీరాము దన్న మాటలు.

దేశే దేశే కళత్రాణి దేశే దేశే చ బాన్ధవాః ।
తం తు దేశం న పశ్యామి యత్ర భ్రాతా సహోదరః ॥ - వారా.యుద్ధ. 101-15

ప్రతిదేశంలో కళత్రాలు - భార్యలు లభిస్తారుయ ప్రతిదేశంలోను మిత్రులు, బంధువులు ఎందరో కనబడతారు. కాని సహోదరుడైన సోదరుడు లభించే స్థానమెక్కడా కనిపించడం లేదు. ఇట్టి భ్రాతృ భావాలను మన జీవితాల్లో అనుసరించమని ఈ ఉదాహరణలు మనకొక సందేశాన్ని అందిస్తున్నాయి. ఇట్టి ఆదర్శాలు మన జీవన విధానంలోనికి రానంతవరకు మనం ఉన్నతిని పొందజాలం.

సోదరీమణులు పరస్పరం ద్వేషించుకోరాదు:-
"2. మా స్వసారముత స్వసా" - సోదరి తన సోదరిని ద్వేషించరాదు. సోదరులవలె సోదరీమణులున్ను పరస్పరం పోట్లాటలు, కీచులాటలు మానివేసి కలిసిమెలిసి ప్రేమతో మెలగాలి.

సాధారణంగా సోదరులు పరస్పరం కలహించుకొన్నట్లే సోదరీమణులున్నూ పరస్పరం ద్వేషించుకోవడం చూస్తాం. పెద్దక్కను కాన్వెంట్ స్కూల్లో చదివిస్తున్నారు నన్ను మామూలు బడిలో చదివిస్తున్నారని చెల్లెలు అక్కను ద్వేషిస్తుంది. కొన్ని సమయాల్లో వస్త్రాల వద్ద, ఆభూషణాల వద్ద పేచీ పెట్టుకొని వాగ్యుద్ధానికి సిద్ధమౌతుంటారు. మరొకప్పుడు - అక్కకు పెండ్లి ఆర్భాటంగా చేశారు, కట్నం అధికంగా ఇచ్చారు అని ఈర్ష్య పడడం కూడా జరుగుతుంది. ఇట్టి చిన్న చిన్న విషయాలు ఉపేక్షించి, పరస్పరం ప్రేమతో వ్యవహరించడం గృహశాంతి సౌఖ్యాలకు ముఖ్యం.

సోదరుడు సోదరి పరస్పరం ఎలా ఉండాలి?
3. "మాభ్రాతా స్వసారం ద్విక్షన్" - ఈ మంత్రంలో - సోదరుడు సోదరి పరస్పరం ద్వేషించుకోరాదనే అభిప్రాయం వ్యక్త మౌతుంది. సోదరుల మధ్య, సోదరీమణుల మధ్య ప్రేమ ఉన్నట్లే సోదర - సోదరీమణుల మధ్య కూడా ప్రేమ ఉండాలి.

భారతీయ చరిత్రల్లో సోదరసోదరీమణుల మధ్య ఈర్ష్యాద్వేషాలకు సంబంధించిన

నన్నివేశాలు అరుదుగా లభిస్తాయి. రక్షాబంధన పర్వదినం నాడు సోదరి సోదరుని హస్తానికి "రాఖీని" (రక్షాబంధన కవచము) కడుతుంది. వివాహ సందర్భంలో సోదరుడు సోదరి దోసిలిలో పేలాలు పోసి (లాజా హోమం) ఆమెను ఈ క్రింది మాటలతో ఊరడిస్తాడు. "సోదరీ ! నీవెప్పుడు ఇంటికి వచ్చినా తిరిగి పతి గృహానికి వెళ్ళేటపుడు నేను నా శుభ ఆదాయాన్ని నీదోసిళ్ళనిండా నింపుతుంటాను" సోదరి – సోదరుల మధ్యగల ప్రేమకు క్రింది ఉదాహరణ ఎంతో బాగుంటుంది చూడండి.

ఒకసారి ఒకధర్మ గురువు తన శిష్యులతో కలిసి ఒక పర్వతాన్ని ఎక్కుతున్నాడు. ఆయనకు శరీరం బలంగా ఉన్నప్పటికి ఎక్కుతుంటే రొప్పు వస్తున్నది. అప్పుడాయనకు ఎనిమిది తొమ్మిది సంవత్సరాల బాలికను వెంట బెట్టుకొని, నాలుగు సం॥ల పిల్లవాడిని తన వీపు మీదవోనస్తూ చిరునవ్వుతో వెళ్ళుతున్న ఒకపడుచు కనబడింది. పర్వత శిఖరం వైపు పోతూ ఆపిల్ల వానితో – పడవేయనా, దొర్లించనా అని చెబుతూ పరిహాస మాడుతున్నది. ఆస్త్రీని చూచి ధర్మగురువు తనను గురించి ఇలా ఆలోచించాడు. "నీవు చాలా బలవంతుడవు కదా ! నీవస్త్రాల భారం కూడ నీవుమోయడం లేదు. ఆభారం శిష్యుల కిచ్చావు. అయినా నీవు రొప్పుతున్నావు. కాని ఈ అమ్మాయి పిల్లవాడిని వీపున కట్టుకొని మోస్తూ కూడ చిరునవ్వుతో తన లక్ష్యం వైపు సాగి పోతున్నది! ఆ అమ్మాయిని గురువిలా ప్రశ్నించాడు. "నీ వీపు మీద పిల్లవాడిని కట్టుకొని కొండ ఎక్కుతున్నావు గదా నీకు భారమనిపించడం లేదా ? బరువేమున్నది. ఏమీ బరువులేదు. ఇతడు నాసోదరుడని ఆ అమ్మాయి బదులు చెప్పింది.

ఇది భారతీయ సంస్కృతి. సోదరికి సోదరుడు సహోదరుడే – బరువేమీ కాదు. పరస్పరం ప్రేమ ఉన్నప్పుడు ఒకరుమరొకరికి భారం కాదు. దీనికి విరుద్ధంగా హృదయం సంకీర్ణమైనపుడు జీవితంలో చేదు అనుభవాలు తలెత్తుతాయి.

సోదరప్రేమకు మరొక ఉదాహరణం చూదండి. కాన్పూరులో ఇద్దరు సోదరులుండే వారు. రాముడు, శ్యాముడని వారి పేర్లు. వారికొక సోదరి ఉంది. ఆమె పేరు లత. వారి తల్లిదండ్రులు చనిపోయారు. రాముడు వ్యవసాయం చేసేవాడు అతడే శ్యామును యమ్.ఏ.యల్.యల్.బి చదివించాడు. అతడు వకీలుగా పనిచేస్తూ ఉండేవాడు.

లత వివాహ యోగ్యురాలైంది. ఆమెకు వరుని చూడడం ప్రారంభించారు. రాముడు ప్రాచీన ఆచారవాది. శ్యాముడు సంస్కారవాది. వరుని విషయంలో వారిద్దరి మధ్య అభిప్రాయభేదాలొచ్చాయి. శ్యాము వేరువడి పోయాడు. లత వివాహం అయిపోయింది. శ్యాము లత వివాహానికి రాలేదు.

ఏకొంచెం సహాయం కూడ చేయలేదు. ఇద్దరు సొదరులమధ్య రాకపోకలు గాని మాటా మంచిగాని లేదు.

శ్రావణమాసం వచ్చింది. లత తన అత్తగారింటి నుండి పుట్టింటికి వచ్చింది. ఒకరోజు లత సాయంకాలం ఒక చెట్టుకు వ్రేలాడ గట్టిన ఉయ్యాలలో ఊగుతున్నది. ఆసమయంలో శ్యాము అటుపోతూ లత పాడే ఈక్రింది పాటను విన్నాడు "చందన చక్కమీద కూర్చుని ఊగుతున్నాను. సిల్కుతాడు కడిమి కొమ్మ పలుచగా ఉన్నది. శ్రీశ్యామునా సోదరుడు నేను ఆయన చెల్లెలిని" – ఈపాటను విన్న శ్యాము 'అయ్యో నేను ఏ చెల్లెలిని మరచిపోయానో ఎవరిని నేను ద్వేషించే వాడినో, ఆమె నన్ను స్మరించుచున్నది' అని తెలిసికొన్నాడు. ఆయన హృదయంలో చెల్లెలిమీద ఉన్న ద్వేషమంతా మటుమాయమైపోయింది. సోదరి కొఱకు వ్యాకులపడసాగాడు. ఆ దిగులుతో మంచం పట్టాడు. ఒకవారం తరువాత, శ్యాము దిగులుతో మంచం పట్టిన విషయం తెలిసి, అన్న అనుమతి పొంది లత శ్యాము ఇంటికి పోయింది. మంచం మీద శ్యాము పడి ఉన్నాడు. స్పృహ లేదు. డాక్టర్, శ్యాము భార్య రమతో పరిస్థితి నిరాశాజనకంగా ఉన్నది. ప్రాణరక్షణ కొకటే మార్గముంది కొంత రక్తం రోగి శరీరానికి ఎక్కించవలసి ఉన్నది అనడం లత విన్నది. 'నా శరీరం నుండి రక్తం తీసి ఎక్కించమని రమ కోరగా, నీవు గర్భవతివి అందులో బలహీనంగా ఉన్నావు గర్భవతి శరీరం నుండి రక్తం తీయడం ఉచితం కాదు. ఒకవేళ నీవు కూడ రోగ గ్రస్తురాలవైతే నీకే రక్తం కావలసి వస్తుంది అని ఉచితం కాదు. ఒకవేళ నీవు కూడ రోగ గ్రస్తురాలవైతే నీకే రక్తం కావలసి వస్తుంది అని డాక్టరన్న మాటలను లత విన్నది. డాక్టరు గారూ ! నేను బలంగా ఉన్నాను. నా శరీరం నుండి రక్తం తీయండి అన్నది. ఆమె వకీలు గారి చిన్న చెల్లెలు, బలంగా ఉన్న సజాతీయురాలని తెలిసికొని రక్తం తీయబోగా – శ్యాము భార్య రమ' డాక్టరు గారూ ! ఆమె రక్తం తీయవద్దు. మేము ఆమె వివాహానికి వెళ్ళలేదు. ఆమెకు ఆసందర్భంలో ఒక్కపైసా కూదా కానుకగా ఇవ్వలేదు. మా మీద ఆమెకు ద్వేషముంటునిది అన్నది. అప్పుడు లత ఇలా జవాబిచ్చింది ! ఏదో చిన్న పొరపాటు జరిగినంత మాత్రాన సోదరుని ద్వేషించడం సోదరికి ధర్మం కాదు. సోదరుడు ఏమి చేసినా సోదరుడే కదా ? ఈమాటలు వినిన తరువాత ఆమె సంతోషంగానే రక్త దానం చేస్తున్న విషయం తెలిసికొని అమ్మా – నీ చేతి రక్తం మంచిదే కాని మీకు కష్టంగా ఉంటుంది కనుక పాదం నుండి రక్తం తీస్తానన్నాడు డాక్టర్. అయ్యా ! పాదాలరక్తమా ? సోదరుని శరీరానికి ఎక్కించడమా ? వద్దు నా చేతి రక్తం కాదు గదా, నా హృదయం నుండి రక్తం తీసి సోదరుని హృదయంలో ఎక్కించండని లత ప్రార్థించింది. ఈ ప్రార్థనకు డాక్టర్ ఆశ్చర్యపడి ఆసోదరి ప్రేమకు ప్రశంసలనందించి, ఆమె రెండు చేతుల నుండి కొంత రక్తం తీసి శ్యాము శరీరానికి ఎక్కించాడు.

ఒక వారం రోజుల్లో శ్యాముబాబు సంపూర్ణంగా ఆరోగ్యవంతుడై నాడు. అతడు తన అన్నగారైన రాముని ఇంటికి వెళ్ళాడు.

అన్న పాదాల మీద పడి చేసిన అపరాధానికి క్షమించమని అడిగాడు. ఆ ఇంట్లోనే ఉండడానికి అనుమతి కోరాడు. తమ్ముని లేవదీసి తన హృదయానికి హత్తుకొని 'శ్యామూ ఈ ఇల్లు నీదేరా ఈ రోజే వచ్చేయి' అని అన్నాడు. అన్నను క్షమించమని కోరిన తరువాత చెల్లెలి వద్దకు వచ్చి లతా ! నిన్ను చూడడానికి నాకు ధైర్యం లేదు. సోదర ప్రేమను మరిచాను. నీవు మాత్రం సోదరి కుండవలసిన ప్రేమను మరువలేదు. అని అన్నాడు. చెల్లెలిట్లన్నది.

"భారతీయ సంస్కృతిననుసరించి సోదరికుండవలసిన ధర్మాన్ని పాటించాను. ఇందులో నన్ను ప్రశంసించవలసిన పనిలేదు. ప్రశంసించ వలసినది భారతీయ సంస్కృతిని మాత్రమే".

రెండవ రోజున శ్యాము స్వగృహానికి వచ్చాడు. రెండు మాసాలయిన తరువాత పుట్టింటికి రెండవసారి వచ్చింది లత. సోదరుడు శ్యాము విరివిగా ఖర్చు పెట్టాడు. చెల్లెలికి వస్త్ర ఆభూషణాలు బహూకరించాడు. బావగారిని పలుకరించి ఆయన మనస్సులో ఉన్న విరోధభావాన్ని కూడ తొలగించాడు.

ప్రతి సోదరుడు, సోదరి ఈ సన్నివేశం నుండి గుణపాఠాన్ని నేర్చుకొని, సోదరప్రేమను తమ తమ జీవితాల్లో స్థిరంగా నిలుపుకోవడం ఉచితమౌతుంది.

కుటుంబ సభ్యులంతా పరస్పరం ఎలా ఉండాలి :-

4. సమ్మఙ్చః :- కుటుంబ సభ్యులంతా ప్రేమపాశబద్ధులై సోదర ప్రేమ పూర్ణులై పరస్పర సహకారంతో ఆనందంగా ఉండాలని వేద సందేశం.

సంగచ్ఛధ్వం సంవదధ్వం సంవోమనాంసి జానతామ్ । దేవాభాగం యథాపూర్వే సఙ్జానానా ఉపాసతే ॥ - ఋ. 10-191-2

మీరంతా కలిసి నడవండి ఒకే మాట మీద ఉండండి. అందరి మనస్సులు ఒకటిగా ఉండుగాక ! విజ్ఞులైన మన పూర్వులు ఏ విధంగా తమ తమ కర్తవ్యాలను నిర్వర్తించుతూ వచ్చారో అదేవిధంగా మీరు కూడ సత్కార్యాలను ఆచరించుతూ ఉండండి.

సమానీ ప్రపా సహవో-న్న భాగః సమానే యోక్త్రే సహవోయుసజ్మి సమ్యఞ్చో -గ్నిం సపర్యతారా నాభిమివాభితః ॥

అధర్వ 3-30-6

మీ అందరికి నీరు త్రాగే స్థలం ఒకటిగా ఉండాలి. అందరూ కలిసి భోజనం చెయ్యాలి. మీ జీవిత లక్ష్యాన్ని సాధించడానికి మిమ్ములనందరిని ఒకే కాడి క్రింద చేరుస్తున్నాను. బండి చక్రంలోని ఆకులన్నీ చక్ర మధ్య నుండే నాభికి బంధింపబడి స్థిరంగా, దృఢంగా ఉన్నట్లు మీరందరూ కలిసి పరమేశ్వరుని ఉపాసించెదరుగాక.

5. సవ్రతా భూత్వా :- మీ అందరి వ్రతము ఒక్కటిగా ఉండుగాక! అందరికి ఒకే ఉత్తమ ఆదర్శములుండుగాక. కలిసి ఒకే బాటన నడవండి. ధర్మము, కర్మల విషయంలో అందరి ఆలోచనలు, ధోరణులు ఒక్కటిగా ఉండాలి. వేరు వేరుగా ఉండరాదు. వేరు వేరు అభిరుచులు, అభిప్రాయ భేదాలుంటే వ్యవస్థ చెడడమేకాక ఏలక్ష్మమూ పూర్తికాదు.

6. వాచం వదత భద్రయా :- పరస్పరం మృదుమధురంగా మాట్లాడు కోండి. మీ ఆదర్శం ఎలా ఉండాలో వేదోపదేశం వినండి. జిహ్వాయా అగ్రే మధు మే జిహ్వామూలే మధూలకమ్ । మమేదహ క్రతవసో మమ చిత్తముపాయసి ॥ - అధర్వ. 1-34-2

నా నాలుక చివర మధువుండుగాక ! హృదయంలో మధుస్రోతస్సు (తేనెతుట్టె) ఉండుగాక ! ఓ మాధుర్యమా నీవు నా సంకల్పాల్లో జీవించెదవు గాక. మధురత్వం నా చిత్తంలో సదాస్థిరపడుగాక !

మధురమైన మాటలచేత ప్రియ వచనాల ద్వారా మానవుడు శక్తి శాలి అయిన గజేంద్రుణ్ణి కూడ బంధించగలడు. అలాగే నీతో పోట్లాటకు, కొట్లాటకు వచ్చిన వానితో కూడ వినమ్రభావంతో మధురంగా మాట్లాడడం వల్ల అతని ఉద్రేకం, కోపం చల్లబడతాయి. శానితచిత్తుడౌతాడు. సిల్కు దారం మెత్తగా ఉన్నాగట్టి గట్టి కర్రల్ని కూడ కట్టి పడవేస్తుంది కద! గృహంలో సుఖశాంతులు, ఆనంద ఉల్లాసాలు ఉండాలంటే, కుటుంబ సభ్యులంతా పరస్పరం మృదు మధురంగా మాట్లాడు కోవాలి. సత్యాన్ని ప్రియంగా హితకరంగా పలకడం చాలా శుభదాయకం.

గృహస్థాశ్రమంలోని శృంగార సాధనాల అంతరార్థం :-

7. గృహస్థాశ్రమంలోని 16 శృంగార సాధనాలు- అలంకరణ సామగ్రికి అర్థం ఇలా చెప్పబడింది.

1. సూనె - విశ్వప్రేమ సూచకం
2. గోరింటాకు - పరోపకార సూచకం
3. చీర - శీలరక్షణ
4. నుదుట కుంకుమరేఖ - న్యాయము
5. బొట్టు - శుభ విచారాలు
6. కాటుక - నేత్రశీలము (మంచిచూపు)
7. మంజనం-(దంతచూర్ణం) - మధురవాణీ సూచకం
8. తమలపాకు - సద్భాషణం
9. కర్ణాభూషణము - శుభశ్రవణము
10. రవిక - సాహస సూచన
11. హారం - ధైర్య సూచకం
12. గాజులు-సత్కృతం (మంచినాచ రించడం) యజ్ఞం, దానం, సేవ మొదలైనవి.
13. ఉంగరం - మంగళసూచకం
14. చేతిగుడ్డ (జేబురుమాలు) - సుయశస్సు (మంచికీర్తి)
15. కమ్మలు - పరకారణ దుఃఖ సహనం
16. మెట్టెలు - హర్షసూచకం

భర్త భార్యతో అంటున్నాడు. ఓప్రేయసీ ! ప్రియురాలివి కాదలిస్తే ఈ 16 రకాల శృంగార వస్తువులు అలకరించుకో. ఇవి యవ్వనానికి శోభ కలిగిస్తాయి. ఇదే జీవన సారాంశం. ఈపై 16 శృంగార వస్తువుల్ని అలంకరించు కోవడంతో పాటు వానిని సూచించే సుగుణాల్ని కూడ అలవరచు కొని స్త్రీ సుశీల అయి ఆదర్శ గృహిణిగా రాణించాలని పెద్దల ఆశయం.

మోప్లాలు నేర్పిన పాఠం

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

హిందూ మతాభిమానం స్వామి శ్రద్ధానందకు మొదటి నుంచీ ఉన్నదే. బలవంతంగానో, మోసపూరితంగానో మతం మార్చబడ్డవాళ్లను తిరిగి ఇంటికి తెచ్చేందుకు అవకాశం వచ్చినప్పుడల్లా ఆయన కష్టపడుతూనే ఉన్నాడు. దాన్ని ఒక ఉద్యమంగా చేపట్టవలసిన అవసరం 1912లో ఉపేంద్రనాథ్ ముఖర్జీని కలిశాక గానీ ఆయనకు బోధపడలేదు.

ఆ సంవత్సరం ఫిబ్రవరిలో శ్రద్ధానంద స్వామి కలకత్తా వెళ్లాడు. ఆర్య సమాజ భవనంలోని పెద్ద హాల్‌లో ఉన్నప్పుడు కల్నల్ యు.ఎన్.ముఖర్జీ ఆయనను కలిశాడు. మిలిటరీ సర్వీసులో పని చేసిన అధికారి కాబట్టి సూటు, బూటులో ఉన్నాడు. ఆ వేషం శ్రద్ధానందకు నచ్చలేదు. కొంచెం చిరాకుగానే 'ఏమిటి విషయం' అన్నాడు. కొద్ది నిమిషాలు మాట్లాడగానే ఆయనకు ఆసక్తి పెరిగింది. లోపలికి తీసుకువెళ్లి కూచోబెట్టి చాలాసేపు సంభాషించాడు.

మూడు దశాబ్దాల కింద 74 శాతంగా ఉన్న హిందువుల జనాభా 1911 జనాభా లెక్కల నాటికి 69శాతానికి ఎలా పడిపోయిందీ కల్నల్ ముఖర్జీ గణానికాల ఆధారాలతో స్వామికి చూపించాడు. 30 ఏళ్లలో 5 శాతం తగ్గినప్పుడు, అదే ధోరణి ఇక ముందూ అలాగే కొనసాగితే 420 ఏళ్లలో భారతదేశంలో హిందూ జాతి మొత్తంగా అంతరించి పోగలదని ఆయన లెక్కగట్టాడు.

ముఖర్జీ రాసిన అంతరిస్తున్న జాతి చిరు పుస్తకాన్ని శ్రద్ధానంద అంతకు ముందే చదివాడు. కాని నేరుగా మాట్లాడాక పరిస్థితి తీవ్రత బాగా అవగతమైంది. అయితే వెంటనే దాని మీద కార్యాచరణకు పూనుకోలేక పోయాడు. గాంధీజీ ప్రభావంతో సత్యాగ్రహ ప్రతిజ్ఞ చేసి రౌలత్ బిల్లులకు వ్యతిరేకంగా ఢిల్లీలో చరిత్రాత్మకమైన పోరాటం నడపడం, ఆ వెంటనే అమృత్‌సర్ కాంగ్రెసు, దళిత జనోద్ధరణ వగైరాల కార్యభారం అందుకు కారణం.

శ్రద్ధానందస్వామి ఏనాడూ ముస్లిం వ్యతిరేకి కాదు. ముస్లింలకూ ఆయనంటే

ఎంతో గౌరవం. ముసల్మాన్లను సోదరుల్లా ఆదరించి అక్కున చేర్చుకోవడానికి అభ్యంతరం లేకపోయినా.. హిందూ - ముస్లిం సఖ్యత పేరిట ముస్లింలలోని మతన్మాద, ఛాందస వర్గాలను గాంధీగారు నెత్తిన పెట్టుకుని, వారు ఏమి చేసినా భరిస్తూ వారు ఆడించినట్టల్లా ఆడుతూ, హిందువులకు తీరని అన్యాయం చేయటాన్ని స్వామీజీ సహించలేక పోయాడు. ఖిలాఫత్ ఉద్యమం వెర్రితతలలు చూశాక గాంధీగారి ముస్లిం పక్షపాతం ఎక్కడికి దారి తీస్తున్నదీ ఆయనకు అర్థమైంది. ఇంకా ఏమైనా భ్రమలు మిగిలి ఉంటే అవి మాప్లా ఘోర కలితో తొలగిపోయాయి.

మాప్లాలు మహమ్మదీయ మతస్థులు. అరేబియా నుంచి వచ్చి వారి పూర్వులు 1200 ఏళ్ల కింద మలబారులో స్థిరపడ్డారు. అక్కడి హిందూ ప్రభువుల పరమత సహిష్ణుత పుణ్యమా అని యథేచ్ఛగా మత ప్రచారం చేసుకుంటూ, తామరతంపరగా వర్ధిల్లారు. 20వ శతాబ్దారంభానికల్లా వారి సంఖ్య పది లక్షలు దాటింది. మతోన్మాదానికి, నేర మనస్తత్వానికి పేరు పడి స్థానిక హిందువలతో ఘర్షణలు పడుతూ, పౌర సమాజానికి తలనెప్పిగా మారారు. 1921 మొదట్లో ఖిలాఫత్ ఊపులో వారి మతావేశం విజృంభించి వెర్రితలలు వేసింది. ఖిలాఫత్ కాన్ఫరెన్సు దుడుకు తీర్మానాల, అలీ సోదరుల విష పూరిత ప్రసంగాల మూలంగా మసీదు నుంచి మసీదుకు, గ్రామం నుంచి గ్రామానికి మతోన్మాదం వ్యాపించింది. కత్తులు, బాకులు, ఈటెలు భారీ ఎత్తున రహస్యంగా పోగు పడ్డాయి. ఆ సంవత్సరం ఆగస్టు నెలలో మాప్లాలు బ్రిటిషు సర్కారుపై యుద్ధం ప్రకటించాడు.

రోడ్లు మూసేశారు. టెలిగ్రాఫ్ లైన్లు తెంపేశారు. రైళ్లు, రైల్వే ఆస్తులు ధ్వంసం చేశారు. ఆకస్మిక దాడికి ప్రభుత్వం దిమ్మెరపోయింది. కొద్దిపాటి ఆఫీసులకు, పోలీసుస్టేషన్లకు మాత్రమే ప్రభుత్వాధికారం పరిమితమైంది. ప్రభుత్వ వ్యవస్థ చచ్చుపడగానే మాప్లాలు స్వరాజ్యాన్ని ప్రకటించారు. ఖిలాఫత్ జండాలను ఎగురవేసి ఎర్నాడ్, వళ్లువనాడు జిల్లాలను ఖిలాఫత్ రాజ్యంగా ప్రకటించారు.

ఇస్లామిక్ రాజ్యం వచ్చిందనగానే హిందువులపై వారి కసి కట్టలు తెచ్చుకుంది. ఊళ్ల మీద పడి ఊచకోతలు, బలవంతపు మతమార్పిడులు, దేవాలయ విధ్వంసాలు, హైందవ సైనిక బలగాలొచ్చి అతికష్టం మీద పరిస్థితిని అదుపుచేసేలోగా నానారకాల రాక్షసకృత్యాలు సాగాయి. కాలికట్‌లో జమోరిన్ మహారాజా అధ్యక్షతన జరిగిన మహాసభ ఆ రోజుల్లో చేసిన తీర్మానంలోని ఈ కింది అంశాలను చూస్తే హిందువులపై మాప్లాల పైశాచికత్వం ఎలాంటిదో కళ్లకు కడుతుంది.

మాప్లా తిరుగుబాటుదారులు సాగించిన ఘోర దురాగతాలను కప్పిపుచ్చటానికి, ఉపేక్షించటానికి కొన్ని స్వార్థపరాయణ వర్గాలు వేస్తున్న యత్నాల పట్ల ఈ మహాసభ తీవ్ర ఆవేదనను, ఆగ్రహాన్ని ప్రకటిస్తున్నది. ఆ దురాగతాలు ఎటువంటివంటే-

(అ) పాశవికంగా మహిళల మానాన్ని హరించటం

(ఆ) బతికి ఉండగానే మనుషుల చర్మం ఒలవటం

(ఇ) పురుషులూ స్త్రీలూ పిల్లలను మూకుమ్మడిగా చంపెయ్యటం

(ఈ) మొత్తం కుటుంబాలను సజీవ దహనం చెయ్యటం

(ఉ) వేల సంఖ్యలో బలవంతంగా మతం మార్పించటం - ఒప్పుకోనివారిని నరికెయ్యటం

(ఊ) సగం చచ్చిన వారిని బావుల్లో విసిరేసి, కొనప్రాణాలతో గంటల తరబడి మరణ యాతనకు గురిచెయ్యటం

(ఎ) అంఖ్యాక దేవాలయాలను ధ్వంసం చేయటం, ఆలయాల్లో ఆవులను చంపటం, పవిత్ర విగ్రహాల మెడలో పేగుల దండలు వేయటం, గోడలకు, గుడి కప్పులకు ఖండిత శిరసులను వేలాడదీయటం...

[*Gandhi And Anarchy,*
C.Sankaran Nair, PP 138-139]

గాంధీ రాజకీయ గురువు గోఖలేగారు స్థాపించిన సర్వెంట్స్ ఆఫ్ ఇండియా సొసైటీ వారు ఊరురా తిరిగి ఆరాలు తీసి వెలువరించిన నివేదిక ప్రకారం **1921** ఆగస్టులో మలబార్ మాప్లాలు **1500** మంది హిందువులను చంపారు. ఇరవై వేల మందిని మెడ మీద కత్తి పెట్టి బలవంతంగా మతం మార్పించారు. మహిళల అపహరణలు, అత్యాచారాలు, సామూహిక మానభంగాలకైతే అంతే లేదు. తల్లుల చేతుల్లోని పసిబిడ్డలను లాక్కుని ముక్కలు చేయటం, గర్భవతుల పొట్టలు కోయటం, భర్తలముందే భార్యలను చెరచటం, బతికుండగానే చర్మాలు వొలవటం, కొన ప్రాణాలతో ఉన్నవారిని బావుల్లో విసిరేయటం - లాంటి మాప్లాల రాక్షసకృత్యాలకు సభ్య ప్రపంచం నిర్ఘాంతపోయి ముక్కున వేలేసుకుంటే -

అహింసా ప్రవక్త గాంధీ మహాత్ముడు మాత్రం -

... Moplah bravery must command admiration. These Malabaris are... fighting for what they consider is Religion and in the manner they consider is religious.

[*Collected works of*
Mahatma Gandhi, Vol. 25,
P.151]

మాప్లాల సాహసాన్ని మనం మెచ్చుకోవాలి. ఈ మలబారీలు తాము మతం అనుకున్న దాని కోసం, మతబద్ధమని తాము అనుకున్న పద్ధతిలో పోరాడుతున్నారు - అని 'యంగ్ ఇండియా' పత్రిక **1-12-1921** తేది సంచికలో మాప్లా నర పిశాచులకు గొప్ప యోగ్యతా పత్రం ఇచ్చాడు. అన్నీ తెలిసిన కాంగ్రెస్ వర్కింగ్ కమిటీ కూడా నిజాన్ని చూడనేరక గాంధీ కళ్లతోనే ఘోర కలిని అవలోకించి - బుద్ధిమంతులైన మాప్లాలను ఓరిమి నశించేంతగా రెచ్చగొట్టటం వల్లే అలాంటి అకృత్యాలకు పాల్పడ్డారంటూ నరరూప రాక్షసులను వెనకేసుకు వచ్చింది.

ముస్లిం మతోన్మాదులు పచ్చి దారుణాలకు ఒడిగట్టినా... ప్రశాంతంగా తమ మానాన తాము బతుకుతున్న హిందూ ప్రజలపై పిశాచాల్లా విరుచుకుపడి వేల సంఖ్యలో బలవంతపు మత మార్పిళ్లు చేయిస్తున్నా హిందువులు రెచ్చిపోకుండా, మహమ్మదీయ సోదరులు చేస్తున్న 'సన్మానాలను' నవ్వుతూ భరించాలనీ... చంపేస్తే హిందూ ముస్లిం ఐక్యత మంత్రాన్ని జపిస్తూ హాయిగా చచ్చిపోవాలనీ మహాత్ముడు బాగానే ప్రవచించాడు. కాని ధర్మాధర్మాలెరిగిన జాతీయ నాయకులు కాంగ్రెసు కీలుబొమ్మల్లాగా తందాన తాన అని వంత పాడలేకపోయారు. మలబారులో జరిగింది స్థానిక ముష్కర మూకల క్షణికోన్మాదమనీ, ముస్లిం సమాజాన్ని, ముస్లిం నాయకులను ఆ విషయంలో తప్పు పట్టరాదనీ భావించటానికి ఆస్కారం లేకుండా ఆలీ సోదరుల వంటి ఖిలాఫత్ నాయకులు మాప్లాలు మతం కోసం సాగించిన సాహస పోరాటాన్ని పరవశించి ప్రస్తుతించారు. మాప్లాల తప్పేమీ లేదంటూ తీర్మానం తరవాత తీర్మానం చేయించారు.

అదే కనుక ముస్లింల వైఖరి అయితే, మాప్లా తరహా ఘాతుకాలు మిగతా దేశంలోనూ జరగవన్న గ్యారంటీ ఏమిటి, మతోన్మాదుల చేతిలో ఊచకోతల నుంచి హిందువులను ఎలా రక్షించాలి అన్న ప్రశ్న హైందవ సమాజంలో సహజంగా తలెత్తింది. దానికి తగ్గట్టే మాప్లా దురంతాల వెనువెంటనే ముల్తాన్, అమృత్‌సర్, కలకత్తాల్లో మత కల్లోలాలు చెలరేగాయి. హిందూ ప్రజానీకంలో తమ ఆత్మరక్షణ ఎలాగన్న భయాందోళనలు అలుముకున్నాయి.

ముస్లింల దూకుడు, వారి ముందు మోకరిల్లిన జాతీయ కాంగ్రెసు నిస్సహాయత గమనించిన లాలా లజపతిరాయ్, మదన్‌మోహన్ మాలవీయ, స్వామి శ్రద్ధానంద వంటి జాతీయ నాయకులు హిందువులను శక్తి వంతులను చేయాల్సిన అవసరాన్ని గుర్తించారు.

Hardly a day passes without our noticing a case or two of kidnapping of Hindu women and children by not only Muslim scoundrels, but also by Muslim men of standing and means... The worst feature of this evil is that Hindus do not stir themselves over this day light robbery of their national stock... There must be no mincing of matters or winking at hard facts in this matter of vital importance to the Hindu community.

[*Patriot,* 24.10.1924]

(హిందు మహిళలను, పిల్లలను ఎత్తుకుపోయారన్న కబుర్లు ఒకటో రెండో వినబడకుండా ఏ రోజూ గడపటం లేదు. ముస్లిం ముష్కరులు మాత్రమే కాదు... డబ్బు, పరపతి ఉన్న ముస్లింలు కూడా ఇందుకు పాల్పడుతున్నట్లు వింటున్నాం... మరీ ఘోరమేమిటంటే తమ జాతీయ సంతతిని ఇలా పట్టపగలు దోచుకుపోతున్నా హిందువుల్లో చలనం లేదు. హిందూ సమాజానికి కీలకమైన ఈ విషయంలో నసుగుడు, కఠోర వాస్తవాలను చూసీ చూడనట్టు ఉపేక్షించటం పనికిరావు)

అని హిందూ మహాసభ అధ్యక్షుడు మదన్‌మోహన్ మాలవీయ బహిరంగ సభల్లో పలు మార్లు నొక్కి చెప్పాడు. **1922** డిసెంబర్ **30**న గయలో కాంగ్రెసు మహాసభ పందిట్లో జరిగిన అఖిల భారత హిందూ మహాసభ వార్షిక సమావేశంలో చరిత్రకెక్కిన సంఘటన ఉద్యమాన్ని మాలవీయగారు ప్రారంభించారు. హిందూ ధర్మం అన్ని మతాలను గౌరవిస్తుంది. కాని తమ మతం ఆపదలో పడినప్పుడు ప్రాణాలు ఒడ్డి అయినా దానిని రక్షించుకోవలసిన బాధ్యత అందరి మీద ఉన్నదని కూడా నొక్కి చెబుతుంది. దీన్ని మరచిపోయి, ధర్మమార్గానికి దూరంగా జరిగినందువల్లే హిందూ సమాజం రకరకాల వైకల్యాలకు లోనయింది. హిందువులు తమ ఈ బలహీనతవల్లే అన్యమతాల వారికి అలుసు అయ్యారు - అని మాలవీయ ఆ సందర్భంగా హెచ్చరించాడు. అన్యాయంగా తమపై దాడి జరిగితే సమర్థంగా ఎదుర్కోగల సత్తా ఎదిరి పక్షానికి ఉన్నదన్న భయం ఉన్నప్పుడే నిజమైన మత సామరస్యం విలసిల్లుతుందని ఆయన ఉద్బోధించాడు.

'ముసల్మాన్లది దౌర్జన్యం... హిందువులది పిరికితనం. పిరికివాళ్లు ఉన్నంతకాలం

దౌర్జన్యం చేసేవాళ్లూ ఉంటారు' అని మహాత్మాగాంధీగారు కూడా సెలవియ్యక పోలేదు. కాని పిరికితనాన్ని పోగొట్టి, దౌర్జన్యాన్ని ఎదుర్కొనేందుకు హిందువులను సిద్ధం చేయటం ఎలాగన్నది ఆయన చెప్పలేదు. ఆ దిశలో ఎవరైనా చిన్న అడుగు వేసినా సహించలేదు. ఆయనకు ఇష్టం లేదని ఊరుకుంటే హిందూ జాతి మనుగడే ప్రమాదంలో పడేట్టుంది. అందుకే లాలా లజపతిరాయ్, మాలవీయ, శ్రద్ధానంద వంటి పెద్దలు చుట్టుముట్టిన నవాళ్లను ఎదుర్కొనేందుకు హిందూ సమాజాన్ని సంఘటితం చేయడానికి సంఘటన ఉద్యమానికి ఊపిరులూదారు.

హిందువులు ఒక్కటైన వేళ...

'సంఘటన' ఉద్యమం **1923**లో మొదలైనా... హిందువులను మత ప్రాతిపదికన సంఘటితం చేయాలన్న ఆలోచన దానికి పదేళ్ల ముందే తలెత్తింది.

రాజకీయాలకు దూరంగా ఉండాలన్న సర్ సయ్యద్ అహ్మద్ విధానాన్ని పక్కనపెట్టి మహమ్మదీయులు **1906**లో 'ముస్లింలీగ్'ను ఏర్పాటు చేసుకున్నారు. తమకూ అటువంటి సంస్థ ఒకటి ఉండటం మంచిదని కొంతమంది హిందూ పెద్దలు తలచారు. మొదట పంజాబ్‌లో **1908**లో మొదలైన హిందూ సభ నాలుగేళ్లపాటు పంజాబ్ ఎల్లలకే పరిమితమైంది. **1913** డిసెంబరులో జరిగిన అంబాలా మహాసభ 'భారతదేశమంతటా ఉన్న హిందూ సమాజం ప్రయోజనాల నిమిత్తం **1915** కుంభమేళాను పురస్కరించుకుని హరిద్వార్‌లో అఖిల భారత హిందువుల మహాసభ జరపాలని' తీర్మానించింది.

జాతీయ మహాసభ నిర్వహణ కోసం దేశం వివిధ ప్రాంతాల నుంచి **26** మంది ప్రముఖులతో ఒక కమిటీ వేశారు. కానీ **1914** సెప్టెంబరులో డెహ్రాడూన్‌లో జరిగిన మొదటి సన్నాహక సమావేశానికి ఐదుగురు పెద్ద మనుషులే హాజరయ్యారు. వారిలో ముగ్గురు డెహ్రాడూన్ వాస్తవ్యులే!

ఆ సంవత్సరం చివర ఫిరోజ్‌పూర్‌లో జరిగిన ఐదవ పంజాబ్ హిందూ సభతో మళ్లీ కాస్త చలనం వచ్చింది. మరుసటి సంవత్సరం జరపదలచిన 'సార్వదేశిక హిందూసభ'కు ప్రధాన కార్యదర్శిగా లాలాసుఖ్‌వీర్ సింగ్‌ను నియమించారు. ఆయన ఎక్కడెక్కడి వారినీ కదిలించి **1915** ఫిబ్రవరిలో హరిద్వార్, లక్నో&, ఢిల్లీలో ప్రాంతీయ సమావేశాలు జరిపాడు. ఢిల్లీలో ప్రధాన కార్యాలయం ఏర్పాటైంది.

అనుకున్న ప్రకారమే ఆ ఏడు హరిద్వార్‌లో మదన్‌మోహన్ మాలవీయ, లాలాలజపత్‌రాయ్ వంటి దిగ్గజాల పూనికతో మేళ తాళాల మధ్య సార్వదేశిక హిందూ సభ వైభవంగా ఆరంభమైంది. కాశింబజారు మహారాజా దానికి అధ్యక్షుడు. ముగ్గురు శంకరాచార్యులు సహా పదముగ్గురు ఉపాధ్యక్షులు. లాలా సుఖ్‌వీర్‌సింగ్ ప్రధాన కార్యదర్శి. దేశం దశ దిశల నుంచి నలభై మంది కార్యవర్గ సభ్యులు.

హిందూ సభకు నిర్దేశించిన లక్ష్యాలివి:

1) హిందూ సమాజంలోని అన్ని వర్గాలను సంఘటితపరచటం.
2) హిందువులలోవిద్యావ్యాప్తి.
3) హిందూ సమాజంలోని అన్ని తరగతుల స్థితిగతులను బాగు చేయటం.
4) ఇండియాలోని ఇతర సముదాయాలతో హిందువులకు సుహృద్భావ సంబంధాలను పెంపొందించటం.
5) మతపరంగా, నైతికంగా, విద్యా విషయకంగా, సాంఘికంగా, రాజకీయంగా హిందువుల ప్రయోజనాలను కాపాడటానికి అన్ని చర్యలు తీసుకోవటం.

షరా: ఈ సభ హిందూ సమాజంలోని ఏ ఒక్క మత వర్గంతో సమేకం కాదు. ఏ మత వర్గాన్నీ వ్యతిరేకించదు. జోక్యం చేసుకోదు.

అఖిల భారత మహాసభ జరిగినప్పుడు శ్రద్ధానంద (అప్పటికి ఆయన సన్యసించలేదు. మహాత్మా మున్షీరాంగానే అందరికీ ఎరిక) హరిద్వార్‌లోనే ఉన్నాడు. ఆహ్వానం అందినా, కాంగ్‌డీ గురుకులంలో ఊపిరి సలపని పని ఒత్తిడి వల్ల వెళ్లలేకపోయాడు. అప్పటి ఊపు చూస్తే హిందూ సమాజం రూపురేఖలను మొత్తంగా మార్చేసే మహాసంస్థ ఆవిర్భవించందనే అందరికీ అనిపించింది.

అది మొదలుకుని వార్షిక సభలు, ప్రత్యేక సభలు క్రమ ప్రకారం బాగానే జరిగాయి. లెఫ్టినెంట్ గవర్నరుకు, వైస్రాయ్‌కి, ఇండియా వ్యవహారాలు చూసే బ్రిటిషు విదేశాంగ మంత్రికి మహజర్లు విరివిగానే సమర్పించారు. గంగాజల శుద్ధి, గోరక్షణ వంటి అంశాలపై తీర్మానాలకూ కొదవలేదు. కాని అటు క్రైస్తవులు, ఇటు ముసల్మాన్లు తెగబడి విచ్చల విడిగా సాగిస్తున్న మతాంతరీకణల పట్ల, హిందూ సమాజంపై పథకం ప్రకారం జరుగుతున్న దాడుల పట్ల దృఢవైఖరి అవలంబించటంలో హిందూ సభ విఫలమైంది. కాంగ్రెసు సంస్థతో చిరకాల సంపర్కం వల్లనైతేనేమి; గాంధీ మహాత్ముడి ప్రభావంవల్లనైతేనేమి; మతాల మధ్య వివాదాలు, ఉద్రిక్తతకు దారి తీసిన అంశాల విషయంలో హిందువులకు ప్రాతినిధ్యం వహించే సంస్థగా కాక... అన్ని మతాలకూ ఆమోదయోగ్యంగా, ఎవరినీ నొప్పించని రీతిలో లౌక్యంగా నడుచుకోవలసిన సెక్యులర్ సంస్థగానే హిందూ సభ తనను తాను భావించుకున్నది. పెరిగిపోతున్న మత కలహాలను అరికట్టటానికి హిందూ, ముస్లిం మతాలకు చెందిన పెద్ద మనుషులతో వివిధ స్థాయిల్లో కమిటీలు వేయాలని... ఆ మతం వారి సెంటిమెంట్లను, నమ్మకాలను ఈ మతం వారు గౌరవించేలా చూసేందుకు ఇరు మతాల వారు, సర్కారు వారు చర్యలు తీసుకోవాలని కాంగ్రెసు తరహా తీర్మానాలు బాగానే చేసింది. దానివల్ల ముసల్మాన్ల విశ్వాసాన్నేమో పొందలేదు. తన ప్రయోజకత్వం మీద హిందూ సమాజానికీ నమ్మకం కలిగించలేదు. **1921** నవంబరు **7**న ఢిల్లీలో జరిగిన అత్యవసర సమావేశంలో విదేశీ వస్తువులను బహిష్కరించాలని, ఖద్దరును ప్రోత్సహించాలని, సర్కారీ బిరుదులను వదిలేసుకోవాలని మహాసభ ఔదలదాల్చినవన్నీ కాంగ్రెసు మార్కు తీర్మానాలే. దీనికి తగ్గట్టే అప్పట్లో కాంగ్రెసు వార్షిక సభల్లోనే హిందూ మహాసభ సమావేశాలూ సైడ్ షోగా జరిగేవి. **1921** ఏప్రిల్‌లో హరిద్వార్‌లో జరిగిన ఆరవ మహాసభలో 'హిందూ సభ' పేరుకు 'మహా' జోడించి ఆలిండియా హిందూ మహాసభగానైతే మార్చారు. కాని కాంగ్రెసు తోకలా కొనసాగినంత కాలమూ హిందూ సమాజంలో దాని ప్రాముఖ్యం అంతం మాత్రమే.

ఖిలాఫత్ సమస్య నలిగినంత కాలమూ, తాము అనుకున్నది సాధించటానికి హిందువుల మద్దతు ముసల్మాన్లకు అవసరమైనంద వరకూ 'హిందూ - ముస్లిం సఖ్యత' కబుర్లు బాగానే నడిచాయి. టర్కీలో ఖలీఫా పీఠాన్ని కమాల్‌పాషా చెత్తకుండీలో పడేశాక ఖిలాఫత్ డిమాండుకు అడుగు ఊడిపోయింది. హిందువులతో సఖ్యత నెరిపిన కాలంలోనే 'జమాయతే ఉలేమా ఇ హింద్' లాంటి మత సంస్థలను స్థాపించుకున్న ముసల్మాన్ వర్గాల వైఖరి ఖిలాఫత్ అక్కర తీరాక మరీ కరకుబారింది. మలబార్, ముల్తాన్‌లలో

ముస్లిం మతోన్మాదం జడలు విప్పి విజృంభించి వందల, వేల సంఖ్యలో హిందువుల మెడ మీద కత్తి పెట్టి బలవంతంగా, మహా క్రూరంగా మతం మార్పించింది. దేశం వివిధ ప్రాంతాల్లో ఉద్రిక్తత హెచ్చి, హిందువుల మనుగడ ప్రమాదంలో పడింది. ఇలా అనేక విషాదానుభవాల తరవాత, ఊరకుంటే మొత్తం హిందూజాతే తుడిచిపెట్టుకు పోగలదన్న భయం అందరిలో కలిగాక మాలవీయులాంటి మహానాయకులు నడుముకట్టి హిందూ మహాసభ ఆధ్వర్యంలో 'సంఘటన' ఉద్యమాన్ని చేపట్టారు.

మాలవీయ ఉపన్యాసంలాగే గయలో హిందూ మహాసభ చేసిన తీర్మానాలలోనూ నసుగుడు లేదు. డొంక తిరుగుడు లేదు. మత సామరస్యం నెలకొనాలంటే ముందు హిందూ సమాజం సంఘటితం కావాలి. ఏ రకమైన సవాలునైనా ఎదుర్కొనేందుకు సన్నద్ధం కావాలి. నిరర్థక శాంతి వచనాలను, నిష్క్రియాపర్వతాన్ని వదలి ప్రతి హిందువూ మగటిమి చూపాలి. శారీరక వ్యాయామానికి, కర్రసాము వంటి విద్యలకు ప్రాధాన్యం ఇవ్వాలి. దేశంలోని ప్రతి గ్రామంలో, ప్రతి పట్టణంలో హిందూ మహాసభ శాఖలు, హిందూ రక్షా మండలులు ఏర్పాటు కావాలి. మలబారు, ముల్తాన్‌లలో జరిగిన అమానుష అత్యాచారాల వంటివి మళ్లీ జరగనీయకుండా హిందూ మహిళలు ఆత్మరక్షణకు ఆయుధాలు పట్టి, తమ జోలికి ఎవరైనా వస్తే భద్రకాళుల్లా విజృంభించి, ముష్కర మూకల పీచమణచాలి. భౌతికంగా, వ్యవస్థాపరంగా, సామాజికంగా హిందువులు బలోపేతులై ఎటువంటి పరిస్థితినైనా ఎదుర్కొనేందుకు సర్వసన్నద్ధంగా ఉండాలి.

స్థూలంగా ఇదీ హిందూ మహాసభ ఉద్బోధ. ముఖ్యంగా ఉత్తర, తూర్పు భారతాల్లో, అందునా పంజాబ్, యు.పి., బీహార్, బెంగాల్ రాష్ట్రాల్లో దీని ప్రభావం బాగా కనిపించింది. 'సంఘటన' ఉద్యమం కారణంగా ముస్లిం మతవాదుల దూకుడు, మతకలహాలు తగ్గాయి. ఇరు మతాల మధ్య ఒక రకమైన 'సాయుధశాంతి' నెలకొంది. తమ జోలికి వస్తే దెబ్బకు దెబ్బ తియ్యటానికి అవతలివారూ సన్నద్ధంగా ఉన్నారని గ్రహించడంతో హిందువులపై మతపరమైన ఆగడాలు చాలావరకు ఆగాయి.

మామూలుగా అయితే సామాజిక శాంతిని ఆకాంక్షించే వారెవరైనా ఈ పరిణామాన్ని హర్షించాలి. కాని శాంతి, అహింసల ప్రవక్త మహాత్మాగాంధీగారు మాత్రం హిందువుల 'సంఘటన'ను తీవ్రంగా వ్యతిరేకించాడు. హిందువులు ఊరురా రక్షణ దళాలను ఏర్పరచుకుని, ఆత్మరక్షణకు గట్టి ఏర్పాట్లు చేసుకోవటంవల్ల సామాజిక ఉద్రిక్తతలు హెచ్చి, వైషమ్యాలు పెరిగి మతసామరస్యానికి ముప్పు వస్తుందని ఆయన చాలా చిరాకు పడ్డాడు. ముస్లిం సోదరులు దుర్మార్గంగా కత్తిదూసి, తన ప్రాణాలు తీయాలని ముచ్చట పడితే, వారి చేతిలో హాయిగా చచ్చిపోయి, హిందూ - ముస్లిం ఐక్యత కోసం ప్రాణాలను బలిదానం చేసిన అమరుల జాబితాలో ఆనందంగా చేరిపోవటమే హిందువులకు గాంధీగారు నిర్దేశించిన పవిత్ర కర్తవ్యం. ఆత్మరక్షణకైనా సరే ముస్లిం సోదరుడి కత్తికి ఎదురుతిరగటం ఆయనకు సుతరామూ ఇష్టం ఉండదు.

అయితే సామాన్య మానవమాత్రులకు ఆయనకున్నంత స్థితప్రజ్ఞ ఉండదు. పరుల ప్రాణాల మీద మహాత్ముడికి లేని తీపి వారి ప్రాణాల మీద వారికి ఉంది. కాబట్టి అంతటి మహానుభావుడు వద్దు వద్దని ఎంత వారించినా సరే హిందూ నాయకులు అప్పటి ఉద్రిక్త పరిస్థితుల్లో తమ ధర్మ సంరక్షణ పట్ల తమ బాధ్యతను నిర్వర్తించటం మానలేదు. రక్షణ దళాలు, మహిళలకు ఆత్మరక్షణ తర్ఫీదులు వగైరా కార్యక్రమం కాస్త 'మిలిటెంటు'గా తోచినప్పటికీ సంఘటన ఉద్యమాన్ని నడిపించిన మాలవీయ, శ్రద్ధానంద, లజపతిరాయ్ వంటి నాయకులు స్వతహాగా సౌమ్యులు. 'సర్వధర్మ సమభావ' సిద్ధాంతంలో పరిపూర్ణ విశ్వాసం ఉన్నవారు. హిందువుల మంచితనాన్ని బలహీనతగా ఎంచి, నిష్కారణంగా దౌర్జన్యంగా దాడికి దిగే మతోన్మాదుల బారి నుంచి కాచుకోవడానికి తప్పనిసరయి ప్రత్యక్ష కార్యాచరణకు పిలుపునిచ్చినా, అది వెర్రితలలు వేసి వికృత రూపం దాల్చకుండా వారు జాగ్రత్తపడ్డారు. ప్రతి ఊళ్లో హిందూ సభలను ఏర్పాటు చేసుకోవాలంటూనే, ప్రతినెలా ఇతర మతాల వారితో సమావేశాలు జరిపి, మత సామరస్యం కాపాడటానికి చొరవ తీసుకోవాలని 'సంఘటన' ఉద్యమ నాయకులు సూచించారు. ముస్లిం మతోన్మాదానికి పోటీగా హిందూ మతోన్మాదం తలెత్తకుండా, మతసఖ్యతకు హిందువుల వల్ల భంగం కలగకుండా వారు అది నుంచీ అప్రమత్తత చూపారు.

ఇరుపక్షాలూ సమానంగా బలవంతులైనప్పుడే మతాల నడుమ ఐక్యత, సుహృద్భావం నెలకొంటాయు'ని హిందూ మహాసభ వారణాసి సమావేశాల్లో మాలవీయ వెలిబుచ్చిన అభిప్రాయాన్ని ఆనాటి లిబరల్ పత్రికలు సైతం సమర్థించాయి. ఇక బిపిన్ చంద్రపాల్ అయితే- 'ఇండియా అనేక మత, సాంస్కృతిక సముదాయాల సమాఖ్య. &ందులోని ప్రతి యూనిటూ శక్తిని, సంఘీభావాన్ని సంతరించుకున్నప్పుడే ఆ సమాఖ్య 'సమానుల కలయిక'గా అవుతుంది' అని అమృతబజార్ పత్రికలో సంపాదకీయమే రాశాడు. అంతర్గత బలహీనతలను తొలగించుకుని హిందూ సమాజాన్ని పునర్వ్యవస్థీకరించవలసిన అవసరాన్ని సరోజినాయుడు అంతటి సెక్యులరిస్టు సైతం **1920** డిసెంబరులో కాన్పూరు హిందూ మహాసభలో నొక్కి చెప్పింది.

ఇలా మహామహుల అండదండలతో 'సంఘటన' ఉద్యమం అంచనాలకు మించి జయప్రదమైంది. నిస్తబ్ద హిందూ సమాజం జవసత్వాలను సంతరించుకొని, ఇకపై దాడులు జరగకుండా తమ మతాన్ని రక్షించుకోవటానికి సంఘటితమవటం బాగానే ఉంది. కాని వెనకటి దాడుల్లో చిక్కి, ప్రాణాలను నిలుపుకునేందుకు, అవమానాలను తప్పించుకునేందుకు గత్యంతరం లేక మతం మారిన కోట్లాది హిందువుల సంగతేమిటి? విరినలా వదిలేయుటమేనా ? మళ్లీ తిరిగి సనాతన ధర్మంలోకి రావాలని తహతహ లాడుతున్న అభాగ్యుల ఆర్తిని తీర్చడానికి చేయగలిగింది ఏమైనా ఉందా?

ఈ విషయమై స్వామి శ్రద్ధానంద తీవ్రంగా మథనపడ్డాడు. బాగా ఆలోచించిన మీదట ఒక పరిష్కారం కనుగొన్నాడు.

అదే చరిత్ర ప్రసిద్ధి చెందిన 'శుద్ధి'!

A UNIQUE BOOK
VEDIC CONCEPT OF
CULTURE
AND
CIVILIZATION
Book released by Sabha
PRICE 90/- concessional price
Rs. 50/- per copy only order
immediately

पद्मश्री डॉ. टी.वी. नारायणजी का सम्मान समारोह

सभा के कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी श्रीवास्तव दयालबावली आर्य समाज तथा चैतन्यपुरी आर्य समाज के प्रमुख महानुभाव विद्वत समागम के अवसर पर स्वामी ब्रह्मानंदजी का सम्मान करते हुए सभा उपाध्यक्ष लक्ष्मणजी ठाकुर, पुस्तकाध्यक्ष श्री गुरुनारायणजी और सभा उपमंत्री श्री रामचन्द्र कुमारजी ।

ఆర్య సమాజ్ న్యూ బోయిన్‌పల్లి సికింద్రాబాద్

(ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అనుబంధ శాఖ)

ఆధ్వర్యంలో

141 వ ఆర్య సమాజ స్థాపన దినము మరియు

గాయత్రి మహాయజ్ఞం

ఏప్రిల్ 08-04-2016 శుక్రవారము రోజున

ఉదయం 6.00 గం॥ల నుండి సా॥ 6.00 గం॥ల వరకు

ఆర్య సమాజ్ న్యూ బోయిన్‌పల్లి సికింద్రాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఏప్రిల్ 08-04-2016 శుక్రవారము రోజున ఉదయం 6.00 గం॥ల నుండి సా॥ 6.00 గం॥ల వరకు 141 వ ఆర్య సమాజ స్థాపన దివస్ సందర్భమున గాయత్రి మహాయజ్ఞము సమాజ మందిరములో నిర్వహించబడును కావున తామెల్లరు నిరంతరంగా 12 గం॥లు జరుగు ఈ మహా యజ్ఞములో తప్పక (ఎంత బిజిగా ఉన్న) పాల్గొని కనీసము 3 అహుతులైన ఇచ్చి ధన్యులు కాగలరని కోరుచున్నాము.

ప్రెసిడెంట్	ట్రెజరర్	సెక్రెటరి
వరుణ్ రాజ్	**అంజిరెడ్డి**	**బృహస్పతి**

ఆర్య సమాజ్ న్యూబోయిన్‌పల్లి సికింద్రాబాద్

సెల్ నెం. : 9652669732.

आर्यसमाज न्यू बोईनपल्ली, सिकन्दराबाद

(आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना'' से अनुबंधित)

के तत्तवादान में

141वा आर्य समाज स्थापना दिवस व

गायत्री महा यज्ञ

सभी को सादर आमंत्रण

141वे आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 08-04-2016 शुक्रवार के दिन प्रातः 6.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक गायत्रि महा यज्ञ का आयोजन आर्य समाज न्यू बोईनपल्ली में किया जा रहा है । सभी से निवेदन है कि इस यज्ञ में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर पुण्य के भाग्य बने । अपनी व्यस्तता के बावजूद कम से कम तीन-तीन आहुतिया देकर कार्यक्रम को सफल बनाए ।

प्रधान	कोषाध्यक्ष	मंत्री
वरुणराज	**अन्जिरेड्डी**	**बृहस्पति**

आर्यसमाज न्यू बोइनपल्ली, पेद्दातोकट्टा, सिकन्दराबाद, **सेल नं : 9652669732**

पद्मश्री डॉ. टी.वी. नारायणजी के सम्मान समारोह

पद्मश्री डॉ. टी.वी. नारायणजी के सम्मान समारोह में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए
गृह राज्य मंत्री श्री नायनी नरसिंहा रेड्डीजी

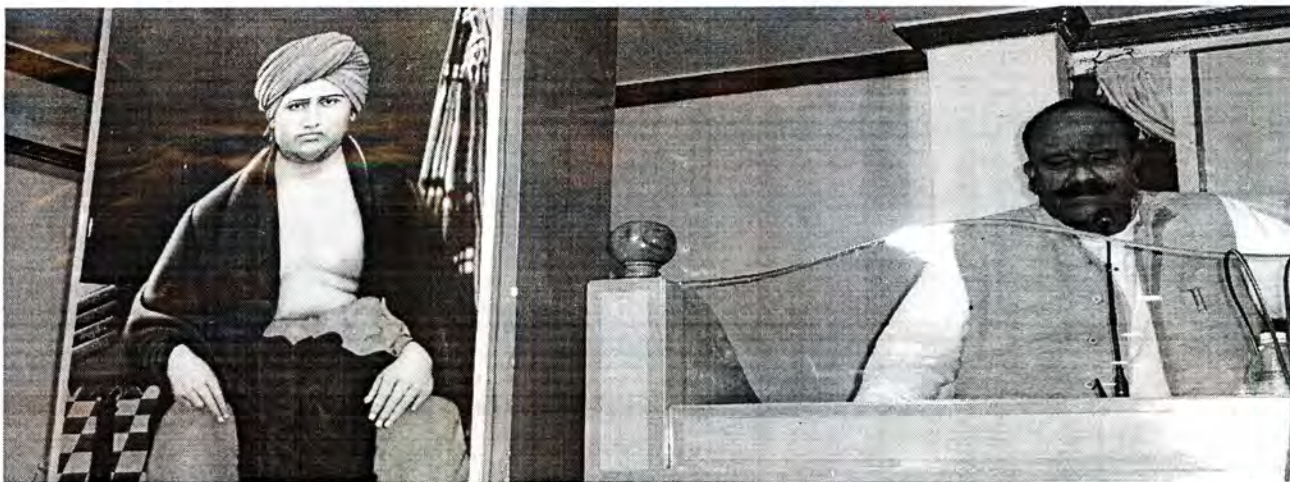

सम्मान समारोह के सन्दर्भ में **Vedic concept of culture and civilization** पुस्तक का लोकार्पण करते हुए गृहराज्य मंत्री नायनी नरसिंहा रेड्डीजी केन्द्रीय श्रम मंत्री बण्डारु दत्तात्रेयजी, डॉ. टी.वी. नारायणजी, स्वामी ब्रह्मानंदजी कामारेड्डी, सभाप्रधान श्री विट्ठल राव आर्यजी एवं सभामंत्री श्री हरिकिशनजी वेदालंकार ।

स्वतंत्रता सेनानी व याज्ञिक श्री पं. के.वी. रेड्डीजी तथा प्रसिद्ध वैदिक कवि श्री संगमेश्वरजी संगम का सम्मान करते हुए सभा के अधिकारिगण कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव, श्री राजारामजी, उपप्रधान श्री लक्ष्मणसिंहजी ठाकूर, श्री गुरुनारायणजी पुस्तकाध्यक्ष, श्री सत्यनारायणजी उपमंत्री

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-03-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 100/- సంపాదకులు - విఠలేరావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To

వేదిక్ ... కల్చర్ అండ్ సివిలైజేషన్ పుస్తకాన్ని ఆవిష్కరిస్తున్న మంత్రులు దత్తాత్రేయ, నాయిని నర్సింహారెడ్డి తదితరులు

సంస్కృతిని పరిరక్షించుకోవాలి

కేంద్రమంత్రి దత్తాత్రేయ

హిమాయత్‌నగర్: మనదేశ సంస్కృతి సంప్రదాయాలను పరిరక్షించుకోవాల్సిన బాధ్యత మనందరిపై ఉందని కేంద్రం మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ అన్నారు. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో ఆదివారం రాత్రి నారాయణగూడలోని పండిట్ నరేంద్రభవన్‌లో పద్మశ్రీ అవార్డు గ్రహీత డాక్టర్ టీవీ.నారాయణ అభినందన సత్కారసభ నిర్వహించారు. ముఖ్యఅతిథిగా పాల్గొన్న దత్తాత్రేయ మాట్లాడుతూ, ఆర్యసమాజ్, సేవాభారతిల ద్వారా ఆయన ఎంతో సేవచేశారని అభినందించారు. యువత విదేశీ సంస్కృతికి బానిస వుతూ దేశ సంస్కృతిని విస్మరిస్తోందని ఆందోళన వ్యక్తం చేశారు. రాష్ట్ర హోంమంత్రి నాయిని నర్సింహారెడ్డి మాట్లాడుతూ, నాడు ప్రజాస్వామ్యం దేశంలో నిలబడిందంటే, దానికి ఆర్యసమాజ్ నేతలే కారణమన్నారు. స్వాయ, సామాజిక పోరాటాలలో ప్రజలకు ఆర్యసమాజ్ నాయకులు అండగా నిలబడ్డారని అన్నారు. ఈ సందర్భంగా పండిట్ గంగప్రసాద్ ఉపాధ్యాయ రచించిన వేదిక్ ఆఫ్ కల్చర్ అండ్ సివిలైజేషన్ పుస్తకాన్ని ఆవిష్కరించారు. ఆర్యప్రతినిధి సభ ప్రధాన్ విఠలేరావు ఆర్య, స్వామి బ్రహ్మానందజీ, హరికిషన్ వేదాలంకార్, అశోక్‌కుమార్ శ్రీవాస్తవ తదితరులు పాల్గొన్నారు.

डॉ. टीवी नारायण का सम्मान समारोह आयोजित

हैदराबाद, 1 मार्च-(मिलाप ब्यूरो)

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र-प्रदेश-तेलंगाना के तत्वावधान में राजमोहल्ला स्थित पंडित नरेंद्र भवन में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित डॉ. टी.वी. नारायण का अभिनंदन किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अवसर पर उपस्थित केंद्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि डॉ. टी.वी. नारायण व्यक्तित्व के धनी हैं। आर्य समाज एवं अन्य संस्थाओं में उनके कार्य उल्लेखनीय हैं। बंडारू ने कहा कि आज के युवा विदेशी संस्कृति से प्रभावित होकर अपनी सभ्यता और संस्कृति भूलते जा रहे हैं। निजाम सरकार के खिलाफ हैदराबाद की आज़ादी में डॉ. टी.वी. नारायण ने भाग लिया।

अवसर पर गृहमंत्री नायनी नरसिम्हा रेड्डी ने संबोधित करते हुए कहा कि यदि उन दिनों आर्य समाज नहीं होता, तो हैदराबाद की स्वतंत्रता मुश्किल थी। हैदराबाद के मुक्ति संग्राम में आर्य समाज के नेता आगे थे। नायनी ने कहा कि राष्ट्र निर्माण और व्यक्ति निर्माण में आर्य समाज का योगदान उल्लेखनीय है। अवसर पर पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित 'वैदिक कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर एंड सिविलाइजेशन' पुस्तक का विमोचन किया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष विट्ठल राव आर्य ने की। संचालन सभा के मंत्री हरिकिशन वेदालंकार ने किया।

अवसर पर स्वामी ब्रह्मानंद, अशोक कुमार श्रीवास्तव, श्रीरामचंद्र कुमार, लक्ष्मण सिंह, पी. सत्यनारायण, डॉ. ... व अन्य उपस्थित थे। शांति पाठ के साथ समारोह संपन्न हुआ।

మన సంస్కృతిని కాపాడుకుందాం

కేంద్ర మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ

సంస్కృతి, సంప్రదాయాలు కాపాడుకోవాలి

కేంద్ర కార్మిక శాఖామంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ

సామాజిక విలువలు పెరగాలి

కేంద్ర మంత్రి దత్తాత్రేయ

నారాయణగూడ: సంస్కార వంతమైన, విలువలతో కూడిన సమాజ నిర్మాణం జరగాలంటే టీ.వి.నారాయణ వంటి మహనీయుల జీవితాలను స్ఫూర్తిగా తీసుకోవాలని కేంద్ర కార్మిక శాఖ మంత్రి దత్తాత్రేయ అన్నారు. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో ఆదివారం నారాయణగూడ రాజ్‌మోహల్లాలోని పండిట్ నరేంద్ర భవనంలో ఆర్య సమాజ ప్రముఖ నాయకుడు డా.టీ.వి.నారాయణకు కేంద్ర ప్రభుత్వం పద్మ పురస్కారాన్ని ప్రకటించిన సందర్భంగా సత్కరించారు. ముఖ్యఅతిథి దత్తాత్రేయ మాట్లాడుతూ టీ.వి.నారాయణకు పద్మశ్రీ ప్రకటించడంతో ఆ పురస్కారానికే గౌరవం వచ్చిందన్నారు. సమాజాన్ని సన్మార్గంలో నడిపించే బాధ్యత ఆర్య సమాజానిదే అన్నారు. రాష్ట్ర హోం మంత్రి నర్సింహారెడ్డి మాట్లాడుతూ నాడు తెలంగాణలో జరుగుతున్న అన్యాయానికి వ్యతిరేకంగా పోరాడిన వ్యక్తుల్లో టీ.వి.నారాయణ ఒకరన్నారు.

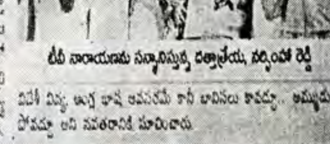

టీవీ నారాయణను సన్మానిస్తున్న దత్తాత్రేయ, నర్సింహా రెడ్డి

విదేశీ విద్య, ఆంగ్ల భాష అవసరమే కానీ బానిసలు కావద్దు.. అమ్ముడు పోవద్దు అని నవతరానికి సూచించారు.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠలేరావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक: श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.